॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

जून, 2015 वर्ष 18, अंक 6
विक्रमी सम्वत् 2072
एक प्रति का मूल्य 10/- रुपये

दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110
दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756

वार्षिक शुल्क 100 रुपये
ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com
कुल पृष्ठ 20

आर्य समाज के गौरव

डॉ. पूनम सूरी, पी.एच.डी. की मानद-उपाधि से अलंकृत

श्री पूनम सूरी, प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति को तीर्थङ्कर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद के दीक्षान्त समारोह पर मूल्याधारित शिक्षा के प्रचार-प्रसार एवं पत्रकारिता तथा वाणिज्य के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए पी.एच.डी. की मानद-उपाधि से अलंकृत किया गया।

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री सुदेश जैन ने उपाधि प्रदान करने से पहले पढ़े गए उल्लेख में भी पूनम सूरी को जनसंचार माध्यम का सुप्रसिद्ध व्यक्तित्व बताते हुए कहा कि श्री सूरी देश के सबसे बड़े शिक्षा-संगठन-डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति के प्रधान हैं जो शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में 20 लाख विद्यार्थियों एवं 60 हजार अध्यापक/अध्यापिकाओं वाले 800 संस्थानों का प्रबंधन करती है।

उल्लेख में कहा गया कि श्री पूनम सूरी के नेतृत्व में ''दैनिक मिलाप'' ने देश में सबसे पहले समयानुकूल परिवर्तन पर केन्द्रित प्रयासों से नई तकनीकों को लागू कर तथा इंटरनेट पर अपनी उपस्थिति दर्ज करके देश की संस्कृति और ढांचे को बनाने में पर्याप्त योगदान दिया है।

श्री जैन ने बताया कि डी.ए.वी. प्रबंधन के प्रधान के रूप में श्री सूरी एक ऐसी शिक्षा-पद्धति के मंत्रद्रष्टा हैं जो शान्ति और समन्वय की ग्राहक हो। चरित्र को परमलक्ष्य मानने वाले श्री सूरी ने शिक्षा को रोजगारोन्मुखी से चरित्र-निर्मात्री बनाने की दिशा में सार्थक प्रयास किए हैं जिसके लिए चरित्र-निर्माण शिविरों के आयोजन किए हैं। उनके नेतृत्व में अध्यापन और प्रबंधन में कम्प्यूटरीकरण के प्रयोग से शिक्षा में

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

गुणात्मकता को बढ़ावा देने हेतु सफल प्रयास किए गए हैं। उल्लेख में यह भी कहा गया कि श्री सूरी के नेतृत्व में 154 कम्पनियां-रिलायन्स, अदानी, टाटा, कोल इण्डिया, वेदान्त तथा पंजाब व हरियाणा पुलिस जैसे संगठन हैं जिनके सहयोग से 'प्रोजेक्ट स्कूल्ज' चलाए जा रहे हैं।

सामाजिक सुधार, पर्यावरण तथा राष्ट्रीय उद्धार के प्रति श्री सूरी के सरोकारों का संकेत करते हुए 'प्रोजेक्ट सेव' का उल्लेख किया गया जिसके चलते 'पेड़ लगाओ', 'जल-संरक्षण करो' और 'जीवन बचाओ' के अन्तर्गत वृक्षारोपण, प्रोजेक्ट बूँद और रक्तदान जैसे राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम किए जा रहे हैं। श्री पूनम सूरी के मार्गदर्शन में सामूहिक विवाह, प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावितों की सहायता, दहेज, भ्रूण-हत्या, भ्रष्टाचार के विरूद्ध आन्दोलन जैसे राष्ट्रीय हित में चलाए जा रहे कार्यक्रमों का भी विशेष उल्लेख किया गया। श्री सूरी के 'एयरो मॉडलिंग' जैसे रचनात्क कार्यो तथा वैदिक साहित्य पर उनके शोध-पूर्ण प्रयत्नों का विशेष उल्लेख किया गया।

उदात्त स्वभाव से धनी श्री सूरी ने इस उपाधि से अलंकृत किए जाने पर अपने विचार रखते हुए अत्यंत नम्रतापूर्वक इस उपलब्धि को डी.ए.वी. में कार्यरत प्रत्येक व्यक्ति के योगदान का फल बताया।

टंकारा परिवार की ओर से इस उपलब्धि के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

डॉ. पूनम सूरी की प्रेरणा से डी.ए.वी. समिति ने 2 करोड़ की राशि प्रधानमन्त्री राष्ट्रीय राहत-कोष के लिए भेंट की

आर्यरत्न डॉ. पूनम सरी जी के नेतृत्व में डी.ए.वी. के पदाधिकारियों का एक शिष्टमंडल प्रधानमन्त्री, श्री नरेन्द्र मोदी जी से मिला और उन्हें प्रधानमन्त्री राहत-कोष के लिए 2 करोड़ की राशि का एक चैक भेंट किया। डी.ए.वी. के उद्देश्यों, लक्ष्यों और सरोकारों का परिचय देते हुए श्री सूरी जी ने मान्य प्रधानमन्त्री जी को बताया कि 20 लाख छात्र-छात्राओं, 60 हजार अध्यापक-अध्यापिकाओं को लेकर 800 डी.ए.वी. संस्थाएं राष्ट्र की अनन्य सेवा कर रही हैं। उन्होंने कहा पर्यावरण, जल तथा स्वास्थ्य को लेकर डी.ए.वी. ने राष्ट्रव्यापी पौध ारोपण, जल-संरक्षण तथा रक्त-दान अभियान चलाकर जन-जागरण की पहल की है।

प्राकृतिक आपदाओं तथा राष्ट्रीय सुरक्षा संकट उपस्थित होने पर डी.ए.वी. ने सहायता शिविरों तथा धन-संग्रह कर राष्ट्र का हाथ बंटाया है। इस दिशा में पर्यावरण बचाओ, जल-संरक्षण करो तथा मानव-जीवन बचाओ जैसे आन्दोलन चलाकर वृक्षारोपण, प्रोजेक्ट बूँद और रक्तदान सप्ताह मनाकर इन समस्याओं पर राष्ट्रीय चेतना जागृत की है। अपनी स्थापना से लेकर प्राकृतिक आपदा के क्षणों में कोयटा, गढ़वाल, कांगड़ा, राजस्थान, उड़ीसा, गुजरात, महाराष्ट्र उत्तराखण्ड आदि स्थानों पर डी.ए.वी. ने तन-मन-धन से सेवा की है। प्रधानमन्त्री राहत कोष में 2 करोड़ रूपये की राशि वर्तमान में आए भुकम्प पर हेतु देने अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए मान्य प्रधानमन्त्री जी ने छात्रों, अध्यापकों सहित डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति को अपना हार्दिक आशीर्वाद दिया।

फूलों की खुशबू केवल हवा के
रूख से फैलती है, लेकिन एक
अच्छी सोच और कड़ी मेहनत
करने वाले व्यक्ति का गुणगान हर तरफ होता है।
- अजय टंकारावाला

अगर दूसरों के दुःख को देखकर
तुम्हें भी दुःख होता है
तो समझ लेना भगवान् ने तुम्हें
इंसान बनाकर कोई गलती नहीं की
- अजय टंकारावाला

महात्मा हंसराज दिवस (सौलन हिमाचल प्रदेश) का समाचार पृष्ठ 19 पर पढ़े)

कैसे करें स्वाध्याय

स्वाध्याय की परम्परा: प्राचीन काल से ही भारत में स्वाध्याय की परम्परा चली आ रही है। प्राचीन काल में भारत में गुरुकुलों में विद्यार्थी की शिक्षा समाप्त होने पर आचार्य शिष्य को विदा करने के समय कहते थे। तुम जीवन में सत्य का अनुसरण करना, धर्म का आचरण करना और स्वाध्याय में कभी प्रमाद मत करना। अत: उस समय स्वाध्याय करने पर बहुत जोर दिया जाता था।

क्या पढ़े:- साहित्य को हम दो श्रेणियों में विभक्त कर सकते हैं-श्रेयकारी और प्रेयकारी। श्रेयकारी साहित्य जीवन का कल्याण करने वाला, उसे ऊँचा उठाने वाला होता है।, प्रेयकारी साहित्य मनुष्य का मनोरंजन करने वाला होता है। स्वाध्याय के अंतर्गत वह सब साहित्य आता है जो मनुष्य की उदात्त भावनाओं को जागृत करता है तथा उसे सत्कर्म करने की प्रेरणा देता है। स्वाध्याय का अर्थ केवल पढ़ना नहीं, आत्म-चिंतन, विचारशीलता व जागरूकता भी है।

लक्ष्य क्या हो:- स्वाध्याय में हमारा लक्ष्य क्या है, यह समझना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि मात्र कुछ पुस्तकों को कुछ समय के लिए पढ़ लेना वास्तविक रूप में स्वाध्याय नहीं है। स्वाध्याय का लक्ष्य है 'स्व' अर्थात् अपने आत्म-स्वरूप की जानकारी। मैं कौन हूँ, मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है, मुझे क्या कर्म करने चाहिये और क्या नहीं करने चाहिए, इन सबका ठीक प्रकार से ज्ञान प्राप्त करना स्वाध्याय का उद्देश्य है। यह अनुभव करना कि शरीर और आत्मा अलग-अलग है। नश्वर शरीर के भीतर जो आत्म-तत्व है, उसका चिंतन व बोध प्राप्त करना स्वाध्याय है। शिक्षा मात्र विभिन्न सूचनाओं का संग्रह नहीं है जो हमारे मस्तिष्क में ठूंस-ठूंस कर भर दी जाती हैं और जो बिना आत्मसात् हुए वहाँ हमेशा गड़बड़ मचाती रहती हैं। हमें उन विचारों की आवश्यकता है जो 'जीवन-निर्माण', 'मनुष्य-निर्माण' तथा 'चरित्र-निर्माण' में सहायक हों। इस प्रकार 'मनुष्यत्व' का ज्ञान प्रदान करने वाली शिक्षा प्राप्त करना ही स्वाध्याय का लक्ष्य है।

स्वाध्याय के अंग: प्राचीनकाल में जब पुस्तकों का प्रचलन नहीं था तब भी स्वाध्याय किया जाता था। उस समय ज्ञान को कंठस्थ रखने की परम्परा थी। शिष्य गुरुजनों से श्रवण कर उन्हें अपनी स्मृति में संजोकर रखते थे। वेदों को 'श्रुति' भी कहा गया, यह इसी तथ्य का सूचक है।

महापुरुषों ने स्वाध्याय के निम्न चार अंगों का विस्तृत विवेचन किया है- **1. वाचना**- स्वाध्याय का पहला प्रकार वाचना है। शास्त्र या सत्यसाहित्य पढ़ना, गुरुजनों से ज्ञान ग्रहण करना, उनके प्रवचन सुनना वाचना कहलाता है। **2. जिज्ञासा**- पढ़े हुए या सुने हुए ज्ञान के बारे में कोई शंका हो या उसका अर्थ स्पष्ट नहीं हो तो उसके बारे में जिज्ञासा वृत्ति से प्रश्न पूछना ताकि विषय स्पष्ट हो जाये। **3. स्मृति**- पूर्व पठित ज्ञान को बार-बार स्मरण करना या उसका पुन:पुन: पारायण करना। बार-बार याद करने से ज्ञान स्मृति में स्थायी रूप से स्थिर हो जाता है। **4. अनुप्रेक्षा**- पठित अंश के बारे में निरन्तर चिंतन-मनन करना तथा विभिन्न दृष्टिकोणों से समझना अनुप्रेक्षा कहलाता है। इससे ज्ञान में व्यापकता आती है। अनुप्रेक्षा द्वारा स्वाध्यायी ज्ञान में गम्भीरता प्राप्त करता है।

स्वाध्याय कैसे करें?- सत्साहित्य का अध्ययन करना स्वाध्याय कहलाता है। स्वाध्याय में पूरा मन लगाना चाहिए। स्वाध्याय गम्भीरतापूर्वक करना चाहिए। अध्ययन में महत्व लम्बाई का नहीं, गम्भीरता का है। बहुत देर तक घंटों अध्ययन करने को मैं लम्बा-चौड़ा अध्ययन कहता हूँ। मन लगा कर नित्य थोड़ी देर किसी एक निश्चित विषय के अध्ययन को मैं गम्भीर अध्ययन कहता हूँ। बांचने, पढ़ने और स्वाध्याय में अंतर है। हम दस पृष्ठों के अखबार की मुख्य-मुख्य खबरें दस मिनट में बाँच लेते हैं। इससे विषय आत्मसात् नहीं होता। हम बाँचते बहुत हैं, थोड़ा पढ़ते भी हैं, पर स्वाध्याय कहाँ है हममें? स्वाध्याय की शर्त यह नहीं है कि हम आसन बैठकर एक नियत समय पर पढ़े, स्वाध्याय की अनिवार्य शर्त है गहरी जिज्ञासा, अपने दोषों-कमियों को दूर करने की तीव्र आकांक्षा और पूर्णता प्राप्त करने का दृढ़ संकल्प जिसमें जिज्ञासा, आकांक्षा और संकल्प की यह त्रिवणी नहीं बहती, वह बाँचेगा, पढ़ेगा पर स्वाध्याय कहाँ करेगा?

स्वाध्याय का प्रारम्भ: स्वाध्याय के लिए ग्रंथो का अध्ययन सर्वश्रेष्ठ है, लेकिन यह काफी कठिन है। अत: शुरु में कुछ चुनी हुई सूक्तियों का अर्थ समझकर आगे बढ़ना चाहिये। सभी भाषाओं में वेद भाष्य हुआ है। महापुरुषों की जीवनियाँ, पंडितों के प्रवचन इत्यादि का पठन व मनन करना चाहिए। इसी प्रकार बोध कथाओं को भी पढ़ना उचित है। कवियों के भजन, दोहे, कविता, स्तोत, सूक्त आदि को पढ़ने, समझने व याद करने से स्वाध्याय में आगे बढ़ा जा सकता है। धीरे-धीरे ज्ञान की गम्भीरता को समझना चाहिए। अनेक स्थानों पर स्वाध्याय के अनेक कार्यक्रम, शिविर आदि आयोजित होते हैं उनमें भाग लेना चाहिए। विशेष रूप से रोजड़ गुजरात स्थित आर्ष आश्रमों में यह सुविध ा उपलब्ध है।

अनुभव: मैं संस्कृत का विद्यार्थी नहीं रहा लेकिन शुरु से ही पुस्तकों को पढ़ने की रूचि थी। आर्य समाज के व्याख्यान प्रति रविवार बाल्यकाल से ही सुनने से स्वाध्याय का भाव जगा। ''सहज तथ्य है कि किसी कार्य का फल उसमें एकाग्र हुए बिना नहीं मिलता। मेरा स्वाध्याय में बहुत मन लगने लगा। उसमें ऐसा रस मिला कि आज 2000 पुस्तको का संग्रह कर सका। इसलिए साधना के अनेक प्रकार होते हुए भी मुझे स्वाध्याय ही सर्वाधिक प्रिय है। यही कारण है कि मैं टंकारा समाचार के माध्यम से इसी अध्ययन के बल पर विविध विषयों पर लेख लिखने संभव हुए।'' स्वाध्याय के द्वारा सामान्य पढ़ा लिखा व्यक्ति भी ध्यान के शिखर पर पहुँच सकता है। ''मेरा सीधा हिसाब है, प्रतिदिन एक घंटे में 10 पृष्ठ पढ़े जा सकते हैं। एक महीने तक 300 पुष्ठ व वर्ष भर में 3650 पृष्ठों को लगभग पढ़ा जा सकता है।

वैसे ज्ञान का अंत नहीं है और मेरा भाषा ज्ञान भी सीमित है। संस्कृत पढ़ी नहीं, अंग्रेजी तो शुरु में पढ़ी तथा वैसी असाधारण प्रतिभा भी मुझ में नहीं है। तभी आज तक कुछ ज्ञानार्जन ही कर रहा हूं। यह स्वाध्याय का ही सुफल है। आशा है मेरे अनुभव से प्रेरणा लेकर सभी लोग स्वाध्याय की ओर प्रवृत्त होंगे और उससे लाभ उठायेंगे।''

स्वाध्याय आत्म-स्वरूप का बोध कराने का उत्तम साधन है। हम प्रतिदिन स्वाध्याय करें, नित नया ज्ञान प्राप्त करें और उसे अन्य लोगों में प्रचारित करें, श्रेष्ठ स्वाध्यायी बनें, इसी में जीवन की सार्थकता है, यही आज के युग की आवश्यकता है।

अजय टंकारावाला

ईश्वर का स्वरूप

❒ डॉ. विनय विद्यालंकार

संसार में लगभग 300 धार्मिक विचारधाराएं अस्तित्व में है जो सभी ईश्वर अथवा किसी न सिकी चेतन सर्वोच्च सत्ता के अस्तित्व को स्वीकार करती है सभी के अनुयायी भी है सभी का केन्द्र ईश्वर एवं उसके नियम हैं। परन्तु ईश्वर के विषय में भिन्न-भिन्न विचार धाराओं को स्थापित करने वाले महापुरुषों के मत भिन्न-भिन्न हैं। इसी कारण व्यक्तियों तथा सम्प्रदायों के व्यवहारिक जीवन में भिन्नता है और यही भिन्नता अनेक प्रकार के कलह वैमनस्यता तथा शत्रुता की पराकाष्ठा तक पहुंच जाती हैं। सभी ईश्वर विश्वासी आस्तिक मत स्वयं को शांति स्थापक सिद्ध करने का प्रयास भी करते है मै कहूं तो दावा भी करते है फिर भी उत्तरोतर वह शत्रुता युद्ध का स्वरूप लेती जा रही है। सच्ची शांति की स्थापना आस्तिकता के यथार्थ भावों से ही हो सकती है ऐसा मेरा मत है। इस विषय में गोष्ठी के विचारणीय तीन बिन्दुओं-ईश्वर कैसा है? कहां रहता है? व क्या करता है? पर संसार के प्राचीनतम सनातम वैदिक मत के आलोक में विचार किया जाना अपेक्षित है-ईश्वर कैसा है?-ईश्वर के स्वरूप पर प्रश्न आते ही-अनेक उपप्रश्न उपस्थित होते है-वह साकार है या निराकर, सगुण है अथवा निर्गुण, सादि है या अनादि, शान्त है या अनन्त, वह अवतार लेता है य अजन्मा है, ईश्वर एक है वा अनेक?-

साकार वा निराकार-सृष्टि के दो रूप है एक साकार व एक निराकर पानी जब भाप बनकर उड़ जाता है तो निराकार हो जाता है परन्तु जब भाप जमकर बादल बन जाती है तो साकार हो जाती है, वायु निराकर है क्योंकि उसे देख नहीं सकते। आकाश निराकार है। अब प्रश्न होता है ईश्वर साकार है या निराकार। साकार वस्तु स्थूल होती है, जो स्थुल वस्तुएं है वह सूक्ष्म में व्यापक नहीं हो सकती। यदि ईश्वर को सर्वव्यापक माना जाएगा तो उसे साकार नहीं माना जा सकता-वेद मंत्र कहता है कि यह समस्त जगत् ईश्वर से आच्छादित है वह कण-कण में व्यापक है-सूक्ष्म परमाणु के अन्दर भी जो उत्प्रेरक है वही ईश्वर है- ओ३म् ईशावास्यमिदं सर्व यत्किञ्च जगत्यां जगत्। (यतु. 40/1)। ईश्वर की सर्वव्यापकता ही उसे सृष्टिकर्ता सिद्ध करती है यदिकर्ता नहीं मानते तो वह ईश्वर-ईश्वर ही नहीं हुआ और आस्तिकता की भांति धर्म से गिरकर चकनाचूर हो जाती है। इसलिए आस्तिकों का ईश्वर को साकार मानना स्वयं अपने मत का खण्डन करना है और नास्तिकों के उपहास का कारण बनना है जिन नियमों निवद्ध होकर सृष्टि संचालन हो रहा है वे नियम यदि सूक्ष्म है तो नियामक उनसे भी अति सूक्ष्म होना सिद्ध होता है।

साकार निर्बल होता है- ईश्वर को साकार सिद्ध करने वालों का तर्क है कि यदि वह साकार नहीं होगा तो शक्तिशाली कैसे होगा। उसे सर्व शक्तिमान् होने के लिए साकार भी होना चाहिए। जबकि दार्शनिक जगत् इस तथ्य से सुपरिचित है कि साकार पर निराकार शासन करता है। निराकार पर साकार कभी शासन नहीं कर सकता है। शरीर साकार है जबकि आत्म शक्ति अति सूक्ष्म निराकार है, जो हाथ को जब चाहे जिधर चाहे चलाती है, कभी-लिखता हूं कभी-खाता हूं, परन्तु उस शक्ति के आभाव में हाथ साकार होते हुए भी कुछ नहीं कर सकता।

अत: स्थूल वस्तुओं को शक्ति सम्पन्न समझना और सूक्ष्म को शक्ति रहित समझना भारी भूल है, यदि ईश्वर सर्वशक्तिमान और सर्व व्यापक है तो उसे अवश्य ही निराकार होना चाहिए।

सगुण अथवा निर्गुण- ईश्वर के स्वरूप को लेकर दो सम्प्रदाय बन गये है सगुणवादी और निर्गुणवादी इसका समाधान वेदों के आलोक में महर्षि दयानन्द जी ने किया-और कहा वह ईश्वर सगुण भी है और निर्गुण भी है। ''वह परमात्मा सब में व्यापक, शीघ्रकारी, अनन्त बलवान् जो शुद्ध सर्वज्ञ, सबका अन्तर्यामी, सर्वोपरि विराजमान, सनातन, स्वयं सिद्ध, आदि गुणों की अपेक्षा से सगुण है तथा अकायम्, अव्रणम् अस्नाविरम्-अपापविद्धम अर्थात्-वह कभी शरीर धारण नहीं करता जिसमें छिद्र नहीं होता, नाड़ी आदि के बंधन में नहीं आता और कभी पापाचरण नहीं करता जिसमें कलेश दु:ख अज्ञान कभी नहीं होता इनकी दृष्टि से वह निर्गुण भी है।

सादि व अनादि- ईश्वर अनादि है क्योंकि उसका कोई आदि कारण नहीं है, समय नहीं है। 'यस्मात पूर्वम नास्ति परम् यास्ति स आदिरित्युच्चते।' न विद्यते आदि: कारणं यस्य सोऽनादिहीश्वर:। + जिससे पूर्व कुछ न हो और परे हो उसको आदि कहते है जिसका आदि कारण और दूसरा नहीं है इसलिए परमेश्वर अनादि है। (सत्यार्थ प्रकाश)

वह अनन्त है-'न विद्यतें अन्तोऽवधिर्मर्यादा यस्य तदनन्तम' जिसका अन्त अवधि मर्यादा (परिणाम) अर्थात् इतना लम्बा चौड़ा छोटा बड़ा ऐसा परिमाण नहीं है। 'सत्यं ज्ञानामनन्तं ब्रहम' (तैतिरोयोपनिषद्)

क्या ईश्वर को अवतार लेने की आवश्यकता है?-वेद की मान्यता है वह कदापि अवतरति नहीं होता-'अजएकपात' सपर्य्यगाच्छुक्रमकायम्' ये यजुर्वेद की सूक्तियां है। यदा-यदा हि धर्मस्य........।। आदि श्रीकृष्ण जी जैसे धर्मात्मा पुरुषों की उक्ति महान् आत्माओं के जन्म लेने के सन्दर्भ में हो सकती है वहां परमात्मा का विनियोग उक्ति नहीं है।

हमारे कुछ विचारक 'कंस' रावण आदि राक्षसों के विनाश हेतु ईश्वर अवतार की कल्पना करते है जो अहेतुक है क्योंकि ऋषि दयानन्द जी ने लिखा है-''प्रथम तो जो जन्मा है वह अवश्य ही मृत्यु को प्राप्त होता है, जो ईश्वर शरीर धारण किये बिना जगत् की उत्पति स्थिति व प्रलय करता है उसके सामने कंस रावण आदि एक कीड़ी के समान भी नहीं। वह सर्वव्यापक होने से कंस रावण आदि के शरीर में भी परिपूर्ण हो रहा है जब चाहे उसी समय मर्मच्छेदन कर विनाश कर सकता है। भला इस अनन्त गुण कर्म-स्वभाव युक्त परमात्मा को एक श्रुद्र जीव के मारने के लिए जन्म मरण युक्त कहने वालों को मूर्खपन से अन्य कुछ विशेष उपमा मिल सकती है? (सत्यार्थ प्रकाश सप्तम समुल्लास)

ईश्वर एक है वा अनेक- यदि हम सृष्टि की प्रक्रिया पर दृष्टिपात करते है तो ज्ञात होता है कि पूरी सृष्टि नियमों में बंधी हुई है, जैसे मुख्य नियमों के अधीन कतिपय लघु नियम है ग्रहों, उपग्रहों, नक्षत्रों आदि की स्थिति बड़ा नियम है तो उसके अधीन अन्न आदि की उत्पत्ति हेतु प्राकृतिक वातावरण के नियम है उदाहरण के लिए भारत में 'अ' नाम व्यक्ति 'ब' नामक वातावरण में गेहूँ उत्पन्न करता है तो आस्ट्रेलिया में बैठे 'स' नामक व्यक्ति की गेहूँ उत्पन्न करने के लिए 'ब' नामक वातावरण ही चाहिए। जबकि 'स' और 'अ' का कोई सम्बन्ध नहीं है परिचय नहीं है परन्तु वातावरण 'ब' ही चाहिए अन्तत: यह सृष्टि नियम के अधीन है। इसी नियम को वेद ने 'ऋत्' कहा है। यह 'ऋत्' एक है कई नहीं। छोटे-छोटे नियम शास्त्र या साइंस अलग-अलग बनाते है। जैसे वनस्पति शास्त्र के नियम, रयासनशास्त्र शास्त्र के नियम, दर्शनशास्त्र, ज्योतिष आदि के नियम। जिस प्रकार एक गणित शास्त्र के अंतर्गत कई छोटे-छोटे शास्त्र है-अंक गणित, बीज गणित, रेखा गणित, त्रिकोणमिति आदि उसी प्रकार बड़े-बड़े शास्त्र भी 'ऋतु' के अधीन है और यह 'ऋतु' उस अपार बुद्धि में निवास करता है जिसे 'ईश्वर' कहा जाता है। ऋग्वेद में मंत्र आता है-'ऋतम् च सत्यंचाभीद्धातपसोऽध्यजायत।। ऋग् 10/190/1 इस 'ऋतु' को रखने वाली विशाल बुद्धि का नाम अभीद्ध है तथा सत्य को रखने वाली शक्ति का नाम तपस् है।

- एसोसिएट प्रोफेसर संस्कृत राजकीय पी.जी. कॉलेज, राम नगर, नैनीताल

दुख का नहीं, आनन्द का उद्‌गम है संघर्ष व अभावों का दंश

❑ सीताराम गुप्ता

पिछले दिनों रेल के सफर के दौरान एक सहयात्री मिले। जल्दी ही घुलमिल गए। न केवल सज्जन थे बातें भी ढेर सारी कर रहे थे। अपने बारे में अधिकाधिक बतलाने को बेचैन भी प्रतीत हो रहे थे। जब सुनने वाले की ओर से ग्रीन सिग्नल मिल जाए तो फिर सुनाने वाले की ट्रेन जिस रफ्तार से दौड़ती है इसका अनुमान आप बखूबी लगा सकते हैं। सहयात्री जो मित्र बन चुके थे कहने लगे कि उन्होंने जीवन में बहुत संघर्ष किया है। कई भाई-बहनों में सबसे बड़े थे। युवावस्था में ही पिताजी की मृत्यु हो जाने के कारण सारे परिवार का बोझ उनके कंधों पर आ गया। सभी भाई-बहनों को पढ़ाया-लिखाया व उनकी शादियाँ की। आज जहाँ एक या दो बच्चों को पढ़ा-लिखाकर उन्हें उनके पैरों पर खड़ा करने में नानी याद आ जाती है वहाँ आठ भाई-बहनों की ज़िम्मेदारी उठाना सचमुच मुश्किल काम है। बड़ा संघर्ष करना पड़ता है। आदमी कैसे इतना सब कुछ कर पाता है? उर्दू शायर 'जिगर' मुरादाबादी कहते हैं :

बहुत हसीन सही सोहबतें गुलों की मगर,
वो ज़िंदगी है जो काँटों के दरमियाँ गुज़रे।

वास्तव में ज़िंदगी का काँटों के दरमियाँ गुज़रना अथवा संघर्ष जीवन की अनिवार्यता है। काँटों के दरमियाँ रहकर ही गुलाब गुलाब बनता है यह एक सत्य है। जगदीश गुप्त अपनी कविता ''सच है महज़ संघर्ष ही'' में संघर्ष को जीवन के लिए अनिवार्य मानते हुए कहते हैं:

सच हम नहीं सच तुम नहीं।
सच है महज़ संघर्ष ही।
संघर्ष से हटकर जिए तो क्या जिए हम या कि तुम।
जो नत हुआ वह मृत हुआ ज्यों वृंत से झरकर कुसुम।
जो लक्ष्य भूल रुका नहीं।
जो हार देख झुका नहीं।
जिसने प्रणय पाथेय माना जीत उसकी ही रही।
सच हम नहीं सच तुम नहीं।

यदि हम अपने चारों तरफ नज़र डालें तो कमोबेश ऐसी ही स्थितियाँ दिखलाई पड़ती हैं। प्राय: सभी को जीवन के किसी न किसी मोढ़ पर किसी न किसी तरह के संघर्ष से दो-चार होना ही पड़ता है। किसी के सर से असमय पिता का साया उठ गया तो कोई ममतामयी माँ के स्नेह-स्पर्श से वंचित रह गया। कोई बहनों के बोझ तले दब-सा गया तो किसी की कलाई बहन से राखी बंधवाने को तरस गई। (परिवार नियोजन के चलते आज ये सामान्य बात हो गई है) किसी के जीवन में प्यार का अभाव है तो किसी के जीवन में चिंताओं का अंबार। कहीं दो वक्त की रोटी के लाले पड़े हैं तो कहीं रोटी होने पर भी उसके स्वाद से वंचित रह जाने की विडंबना। कहीं घर में घर के सदस्यों के बीच सामंजस्य व सौहार्द का अभाव है तो कहीं समाज में जाति-धर्म के नाम पर एक-दूसरे समुदाय के बाच रस्साकशी चल रही है। कहने का तात्पर्य ये है कि अभाव और संघर्ष जीवन के अपरिहार्य अंग हैं।

संघर्षों से पलायन करना कायरता ही नहीं मूर्खता भी है क्योंकि संघर्ष जीवन का अनिवार्य अंग व हमारी विवषता भी है। विषम परिस्थितियाँ तो जीवन में आएँगी ही। ये हम पर निर्भर करता है कि हम उनको स्वीकार कर उनसे मुकाबला करते हुए उनसे पार हो जाएँ, उन्हें दूर करके चैन की नींद सोएँ अथवा परिस्थितियों को दोष देकर उनका निराकरण न करके उनके बोझ से दबे रहकर जीवन को नरक बना डालें। जीवन तो बहरहाल गुज़रेगा ही लेकिन कैसे गुज़रेगा ये हमारे दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। इसे हम सहर्ष स्वीकार कर आनंदमय बना सकते हैं और अस्वीकार कर दुखद भी बना सकते हैं। 'ज़ौक़' कहते हैं:

ऐ शम्अ! तिरी उम्रे-तबीई है रात भर,
हंस कर गुज़ार या इसे रो कर गुज़ार दे।

जीवन के हर मोड़ पर कोई न कोई विषमता, कोई न कोई अभाव मुँह उठाए ही रहता है। किसी का बचपन संघर्षों में गुज़रता है तो किसी की युवावस्था। कोई अधेड़ावस्था में अभावों से जूझ रहा है तो कोई वृद्धावस्था में एकाकीपन की पीड़ा का दंश भोगने को विवश है। हम सबका जीवन किसी न किसी मोड़ पर कमोबेश असंख्य दूसरे अभावग्रस्त अथवा संघर्षशील लोगों जैसा ही होता है। मेरे ही जीवन में अभावाधिक्य रहा है अथवा मैंने ही जीवन में सर्वाधिक संघर्ष किया है और ऐसी परिस्थितियों में मेरे स्थान पर दूसरा कोई होता तो वो सब्र नहीं कर सकता था जो मैंने किया यह सोचना ही बेमानी, वास्तविकता से परे व अहंकारपूर्ण है।

कई लोगों का कहना है कि यदि उनके जीवन में ये तथाकथित बाधाएँ अथवा समस्याएँ न आई होतीं तो उनका जीवन कुछ और ही होता। प्रश्न उठता है कि यदि जीवन ऐसा नहीं होता तो फिर कैसा होता? यहाँ एक बात तो स्पष्ट है कि यदि परिस्थितियाँ भिन्न होतीं तो जीवन भिन्न होता लेकिन ऐसा नहीं होता जैसा आज है। लेकिन जैसा आज है क्या वह कम महत्त्वपूर्ण अथवा महत्त्वहीन है? क्या ऐसे जीवन की कोई सार्थकता अथवा उपयोगिता नहीं? क्या संघर्षमयता स्वयं में जीवन की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि नहीं? इसका उत्तर तो हमारे दृष्टिकोण पर निर्भर करता है।

प्रश्न उठता है कि अभाव और संघर्ष हमारे जीवन में क्या स्थान रखते हैं। क्या ये हमारे जीवन को मात्र कष्टप्रद ही बनाते हैं? यदि हमारे जीवन में तथाकथित अभाव व संघर्ष नहीं होते तो क्या हम वैसे ही होते जैसे आज हैं? ऊपरी तौर पर देखने से तो यही लगता है कि अभाव व संघर्ष व्यक्ति को तोड़ देते हैं, उसे कमज़ोर बना देते हैं लेकिन वास्तविकता इससे भिन्न भी है। ये हमारे अभाव और संघर्ष ही होते हैं जो हमें कमज़ोर नहीं मजबूत बनाते हैं। ये हमारे अभाव और संघर्ष ही होते हैं जिनकी वजह से हम जीवन रूपी आँधी में एक दृढ़ चट्टान की तरह अडिग बने रहते हैं। भट्टी की तेज़ आँच में तपकर ही सोना शुद्ध होता है। आदमी भी संघर्षों की तेज़ आँच में तपकर मनुष्य बनता है। उसमें अच्छे गुणों और जीवनोपयोगी कुशलताओं का विकास होता है जिससे उसमें स्वयं उसके लिए ही नहीं अपितु उसके घर-परिवार व समाज तथा राष्ट्र के लिए भी उपयोगिता उत्पन्न हो जाती है।

संघर्षों से जूझनेवाला बहादुर तथा पलायन करने वाला कायर कहलाता है। अभाव और संघर्ष हमारे जीवन की सबसे बड़ी परीक्षा होते हैं अत: हमारे चरित्र निर्माण अथवा चारित्रिक विकास में बड़े सहायक होते हैं। जो अभावों तथा संघर्षों की आँच में तपकर बड़े होते हैं अथवा

निकलते हैं वह उन लोगों के मुक़बले में महान होते हैं जिन्होंने जीवन में कोई संघर्ष किया ही नहीं। अभाव और संघर्ष जीवन की गुणवत्ता को नए आयाम प्रदान करते हैं। संघर्षशील व्यक्ति अपने जीवनकाल में अथवा संघर्ष के बाद के जोश जीवन में बिना किसी भय के अडिग रह सकता है जबकि संघर्षविहीन व्यक्ति बाद के जीवन में अभाव अथवा दुख के एक हलके से आघात अथवा झोंके से धराशायी हो सकता है। जिनके जीवन में अभाव अथवा संघर्ष की कमी होती है उन्हें आगे बढ़ने के लिए अथवा स्वयं का विकास करने के लिए कठोर परिश्रम करना पड़ता है जिसकी उन्हें आदत नहीं होती।

वास्तविकता ये भी है कि अभावों में व्यक्ति जितना संघर्ष करता है सामान्य परिस्थितियों में कभी नहीं करता। अभाव एक तरह से व्यक्ति के उत्थान के लिए उत्प्रेरक का कार्य करते हैं, उसके विकास की सीढ़ी बन जाते हैं। अभावों से जूझने वाला संघर्षशील व्यक्ति अधिक परिश्रमी ही नहीं अपितु अधिकाधिक सहृदय और संवेदनशील भी होता है। परिस्थितियाँ एक संघर्षशील व्यक्ति में स्वाभाविक रूप से ऐसे गुण पैदा कर देती हैं। संघर्ष चाहे स्वयं के लिए किया जाए अथवा दूसरों को आगे बढ़ाने व उनके हितों की रक्षा करने के लिए संघर्श के उपरांत सफलता मिलने पर ख़ुशी होती है। यही ख़ुशी हमारे अच्छे स्वास्थ्य और समृद्धि में सहायक होती है। हमारी ख़ुशी का हमारे स्वास्थ्य से और स्वास्थ्य का हमारी भौतिक उन्नति से सीधा संबंध है। संघर्ष व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में सहायक होता है।

सफर में थोड़ी बहुत दुश्वारियाँ न हों तो घर पहुँचकर साफ-सुथरे बिस्तर पर आराम करने का आनंद संभव नहीं। इसी प्रकार अभाव की पूर्ति होने पर जो आनंदानुभूति होती है वह अभाव की अनुभूति के बिना संभव नहीं। अभाव व संघर्ष द्वारा ही यह संभव है। संघर्षों का नाम ही जीवन है। जीवन में संघर्ष न हों तो जीने का मज़ा ही जाता रहता है। उर्दू शायर असग़र गोंडवी तो ज़िंदगी की आसानियों को ज़िंदगी के लिए सबसे बड़ी बाधा मानते हुए कहते हैं:

चला जाता हूँ हँसता खेलता मौजे-हवादिस से,
अगर आसानियाँ हो ज़िंदगी दुश्वार हो जाए।

जीवन में आनंद पाना है तो स्वयं को संघर्षों के हवाले कर देना ही श्रेयस्कर है। संघर्ष रूपी कलाकार की छेनी आपके अस्तित्व रूपी पत्थर को तराशकर एक सुंदर प्रतिमा में परिवर्तित करने में जितनी सक्षम होती है अन्य कोई नहीं। मिर्ज़ा 'ग़ालिब' जीवन में विषम परिस्थितियों से उत्पन्न हालात को एक दूरदर्शी व्यक्ति के लिए उस्ताद या गुरू के तमाचे अथवा थप्पड़ की तरह मानते हुए कहते हैं:

अहले-बीनिष को है तूफाने-हवादिस मक्तब,
लत्मा-ए-मौज कम अज़ सीली-ए-उस्ताद नहीं।

हम स्वयं अपने जीवन को रोमांचक, चुनौतीपूर्ण और साहसी बनाने में कोई कसर बाक़ी नहीं रख छोड़ते। ख़तरों के खिलाड़ी कहलवाने में गौरव का अनुभव करते हैं। इससे हमें ख़ुशी मिलती है। लेकिन यदि हमें कोई चुनौती प्राकृतिक रूप से मिल जाती है तो उसे स्वीकार करने अथवा उसके पार जाने में दुविधा क्यों? अभावों तथा संघर्ष को अन्यथा मत लीजिए। उन्हें महत्त्व दीजिए। किसी भी चुनौती को स्वीकार किए बिना उसे जीतना और विजेता बनना असंभव है। संघर्ष हर जीत को संभव बना देता है। संघर्ष दुख नहीं, दुख से बाहर आने का प्रयास होता है। दुख से बाहर आने का अर्थ है सुख, प्रसन्नता अथवा आनंद। संघर्ष आनंद का ही उद्‌गम है।

टंकारा ट्रस्ट इंटरनेट पर
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा
www.tankara.com पर उपलब्ध है

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 12,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

-: निवेदक :-

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

भ्रष्टाचार

❒ श्रीमती अरूणा सतीजा

आज भ्रष्टाचार का मुद्दा जन-जन के हृदय में समाया हुआ है। बच्चे-बच्चे की जुबान पर है। शायद सरकार के पतन तथा वर्तमान सरकार कि सफलता का मुख्य कारण भ्रष्टाचार का मुद्दा ही था। जिस कारण से उन्हें प्रचण्ड बहुमत मिला। अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि भ्रष्टाचार है क्या और इसका जीवन से क्या सम्बन्ध है?

भ्रष्टाचार कुछ नहीं परन्तु मानव जीवन का भावानात्मक पहलू है। यदि इसे ''यज्ञ'' शब्द का विलोम कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। ''यज्ञ'' मानव की दिव्य मनोभावना का ऐसा संग्रह है जो मानव को देवत्व की ओर ले जाता है। भ्रष्टाचार ऐसी दुरप्रवत्तियों का समूह है जो मानव को दानवता की ओर अग्रसर करता है। भ्रष्टाचार शब्द ही स्वयं इसका प्रमाण है। भ्रष्ट+आचार=निकृष्ट आचरण। प्रारम्भ में हमारे देश के राजनेताओं द्वारा किए गए घोटालों से इसे पारिभाषित किया गया। अनैतिक माध्यमों से कमाया गया धन ब्लैक मनी अर्थात् काला धन या नम्बर दो का धन कहलाता है। बिना परिश्रम के अनैतिक अर्थात् अवैध साधनों से कमाया गया अधिक धन धर्म तथा कानून के विरूद्ध है। यह अन्त में मनुष्य को पाप की अंधेरी गलियों में धकेल देता है। मनुष्य अहंकारी, व्यभचारी, शराबी तथा जुआरी बन जाता है। यदि वह सत्ताधरी है तो हिंसा, शोषण और अपराध तो उनके शौक बन जाते है। भ्रष्टाचार आज देश के लिए कैंसर है असाध्य रोग है तथा दीमक है जो राष्ट्र के मान-सम्मान को चट कर रहा है। जैसे यज्ञ शब्द का अर्थ मात्र होम करने तक सीमित है वैसे भ्रष्टाचार को रिश्वतखोरी का नाम दिया जाता है, परन्तु दोनों शब्दों के अर्थ बड़े गहरे तथा विस्तृत हैं। भ्रष्टाचार का क्षेत्र मात्र राजनैतिक गलियारों तक ही सीमित नहीं है अपितु यह तो जन-जन के हृदय में व्याप्त हो चुका है। कुछ बिरले लोग ही है जो इस रोग से सक्रंमित नही है। मानव द्वारा किया गया वह प्रत्येक कार्य भ्रष्टाचार है जो ईश्वरीय नियमों के विरूद्ध है। शुद्धता, सत्यता तथा पवित्रता जिसके मुख्य लक्षण है। वह सदाचार है।

आज जो भी व्यक्ति हों, जहां-तहां हैं, जो-जो कार्य कर रहें है, वह ईमानदारी, कर्त्तव्यनिष्ठा तथा परोपकार की भावना से नहीं अपितु अधिक से अधिक धन कमाने के उद्देश्य से कर रहें हैं। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए चाहे उन्हें मिलावट जैसा जीवन घातक जघन्य पाप तथा जीवन घातक जोखिम क्यों न उठाना पड़े। ऐसा अनुभव होता है कि बिना रिश्वत दिये कोई भी काम पूरा नहीं हो सकता। आज प्रत्येक व्यक्ति अधिक धन और अधिक धन की लम्बी रेस लगा रहा है। धन कमाना कोई पाप नहीं जीवन की अनिवार्यता है। वेदों की ऋचाओं के माध्यम से ''ईश्वर'' ने मानव को ऐश्वर्यशाली होने का आशीर्वाद दिया है। राष्ट्र भी यही चाहता है कि उसका प्रत्येक नागरिक ध न धान्य से सम्पन्न होकर देश को समृद्धिशाली बनाकर आकाश की ऊँचाइयों की ओर ले जाए। परन्तु वह धन ईमानदारी तथा परिश्रम की कमाई हो। वेद कहते है मेहनत से कमाओं, मितव्ययता से खर्च करो और शेष परोपकार में लगा दो। बड़ी विडम्बना तो यह है कि सभी जन भ्रष्टाचार कर्म की पुरजोर निन्दा तो करते है। इससे छुटकारा पाना चाहते हैं परन्तु स्वयं कर्त्तव्यनिष्ठ बन भ्रष्टाचार को छोड़ना नहीं चाहते है। हंसी तो तब आती है जब स्वयं भ्रष्टाचारी ही सबसे अधिक भ्रष्टाचार का विरोध करते नजर आते है। धार्मिक स्थल तो भ्रष्टाचार का गढ़ बनते जा रहे है। बाबे, गुरु, पण्डे आदि कष्ट निवारण तथा मुरादें पूरी करने के नाम पर अपार धन राशि लूट रहे है। आज धर्म कुछ लोगों का समृद्ध उद्योग बन गया है।

कभी-कभी मन में प्रश्न उठता है कि क्या इस दानव का विनाश कभी नहीं होगा? चिन्तन करने पर आत्मा की आवाज आती है। संसार में कुछ भी असंभव नहीं। वेदों के माध्यम से ईश्वर के सत्य अटल नियमों का ज्ञान प्राप्त करके तो देखो। मनुष्य परमेश्वर की सर्वोत्तम रचना है और यह संसार कर्म भूमि है। जहां मनुष्य कर्म भी करता है और फल भी भोगता है। मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है परन्तु ईश्वर फल देने में पूर्ण परतंत्र है। वह किसी को राई भर भी कम या अधिक फल नहीं दे सकता परन्तु किए गए अच्छे या बुरे कर्मो का फल कभी भी माफ नहीं होता। न ही इनका फल आकाश में, न पाताल में, न सृष्टि में, न प्रलयकाल में, न सोने से और न ही हीरे जवाहरातों के चढ़ावे से माफ होता है। इसलिए सदा उत्तम कर्म करों। वेद कहता है ''मर्नु भव'' हे मानव मानवीय गुणों को धारण करने के लिए उत्तम कर्म कर।

महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने उत्तम कर्मो का आधार बताया है 16 संस्कार। (सत्यार्थ प्रकाश में पढ़े)।यदि सती प्रथा, विधवा-विवाह, बालविवाह तथा छुआ-छूत जैसी भयानक बुराईयों को समूल नष्ट किया जा सकता है तो भ्रष्टाचार तो मात्र छोटी सी बुराई है। मात्र आवश्यकता है तो उचित परन्तु सुदृढ़ व शीघ्र दण्ड व्यवस्था की, सुशिक्षा की अर्थात् अविद्या के नाश की, नैतिकता की, शुद्ध वैदिक ज्ञान व धर्म की, जन जागृति की तथा राजा राम मोहन राय, महर्षि स्वामी दयानन्द तथा महात्मा श्रद्धानन्द जैसे बलिदानी समाज सुधारकों की।

प्रश्न हैं- सदा यहा रहना नहीं, वापस इस घर आना नहीं। फिर इसकों क्यों भरे, जिसे तूने सम्भालना नहीं।

यदि भारतीय नागरिक ये संकल्प करें कि वह आज और अभी से अपनी-अपनी आजीविका, ईमानदारी, कड़ी मेहनत तथा उचित साधनों से कमाएगें तो भारत में भ्रष्टाचार का नहीं सदाचार का साम्राज्य होगा यद्यपि ऐसा होना बहुत कठिन है परन्तु असंभव नहीं।

- फ्लैट न. 101 बी-9, ध्रुव मार्ग, तिलक नगर, जयपुर। दूरभाष न. 9460183872

टंकारा समाचार
के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं।

ऋषि जन्मभूमि टंकारा में
आपकी सन्तानों को पढ़ाने का स्वर्णिम अवसर

टंकारा में श्री महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में नये छात्रों का प्रवेश प्रारम्भ हो गया है।

- कक्षा 5, 6 तथा 7 में उत्तीर्ण छात्र जो शरीर और मस्तिष्क से पूर्ण स्वस्थ हो, को प्रवेश दिया जायेगा।
- गुरुकुल में माता-पिता तथा अपने पूर्वजों के प्रति श्रद्धावान्, धर्म, समाज तथा देश के प्रति अपने कर्तव्यधर्मो का निर्वाह करने में सक्षम छात्रों का निर्माण किया जाता है।
- विद्वान तथा चरित्रवान छात्रों के निर्माण में प्राचीन तथा नवीन शिक्षा का समन्वय है। संस्कृत व्याकरण, वेद, दर्शनशास्त्रादि के साथ-साथ ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों को पढ़ाया जाता हैं। वर्तमान की शिक्षा के अनुरूप अंग्रेजी, गणित, भूगोल, विज्ञान आदि पढ़ाने के लिए योग्य अध्यापकों की व्यवस्था है। आधुनिक तकनीक से परिचित रखने के लिए कम्प्यूटर का भी प्रशिक्षण दिया जाता है।
- विद्वता के साथ चरित्रवान बनाने के लिए अपनी सन्तानों को गुरुकुल में अवश्य पढ़ावें।

अधिक जानकारी के लिए पत्र-व्यवहार अथवा मोबाइल द्वारा आचार्य रामदेव शास्त्री का सम्पर्क करें।

आचार्य रामदेव शास्त्री- श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा
डाक- टंकारा, जिला-मोरबी (गुजरात) पिन-363650,
मोबाइल-0991321448, E-mail:tankaratrust@gmail.com

प्रवेश प्रारम्भ
आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया राजस्थान राज्य के अलवर जिले में राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित है। यह गुरुकुल दिल्ली से 100 किलोमीटर एवं जयपुर से 150 किलोमीटर की दूरी पर है। यह गुरुकुल वर्तमान में कन्याओं की शिक्षा का सर्वोत्तम केन्द्र है। अतः समस्त आर्यजनों से निवेदन है कि गुरुकुल में बालिकाओं को प्रवेश दिलाकर आर्ष सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में योगदान दें एवम् अपनी बालिकाओं को आज के परिपेक्ष में पूर्ण रूप से वीरांगना बनावें। बालिकाओं को स्वरक्षा एवम् वैदिक विदुषी के लिए प्रवेश दिलवायें। बालिकाओं के लिए पौष्टिक भोजन, कम्प्यूटर शिक्षा, सुव्यवस्थित छात्रावास एवम् बिजली जाने पर इन्वटर/जरनेटर की व्यवस्था।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

आचार्य प्रेमलता, आर्ष कन्या गुरुकुल
दाधिया, अलवर, राजस्थान-301401, फोन : 01495-270503, मो. 09416747308

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर **7000/-**रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

वेदानुसार जातवेदा अग्नि ही शिक्षा मंत्रालय

❒ डॉ. अशोक आर्य

वेद प्रभु का दिया हुआ सर्वोच्च ज्ञान है, जो प्राणी मात्र के कल्याण के लिए दिया गया है। कल्याण कैसे होगा? कुछ तो प्राणी स्वयं अपने कार्यो के व्यवस्थापन से कल्याण करता है और शेष देश के राजा के क्रिया कलापों से होता हैं। वेदानुसार राजा की नियुक्ति प्रजा करती है तथा राजा प्रजा के कल्याण के लिए अनेक संस्थाएं बनाते हैं। इन संस्थाओं में मन्त्री मंडल भी एक के रूप में ही कार्य करता है। इसे भी हम एक संस्था ही कह सकते हैं, जिसे जन कल्याण के लिए नियुक्त किया जाता है ताकि वह राजा को उत्तम सुझाव दे सकें तथा राजा की बनाई गई सभाओं तथा समितियों द्वारा लिए गए निर्णयों को जन-जन में विख्यात कर उनका पालन करते हुए जन कल्याण के कार्य करें। इन मंत्रियों को विभिन्न विभाग आवंटित किये जाते हैं। कौन से विभाग को क्या नाम दिया जावे, इस सम्बन्ध में भी वेद में स्पष्ट उल्लेख मिलाता है। यथा वेद में शिक्षा विभाग वाले मन्त्री के लिए जातवेदा अग्नि अथवा अग्नि शब्द का प्रयोग किया गया है तथा कहा गया है कि जो मंत्रालय अपनी प्रजा की ज्ञान अग्नि को प्रदीप्त करे उस मन्त्रालय को जातवेद अग्नि अथवा अग्नि के नाम से जाना जावे। यह शिक्षा मन्त्री के लिए दिया गया वेद में उल्लिखत शब्द है।

शिक्षा मन्त्री:- वेद में स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि प्रजा के हित के लिए उसे शिक्षित किया जावे। इसलिए राजा एक शिक्षा मंत्रालय बनाकर उसके लिए एक शिक्षा मन्त्री नियुक्त किया जावे। इस शिक्षा मंत्रालय के लिए जो मन्त्री नियुक्त किया जावे उसे जातवेदा अग्नि अथवा अग्नि के नाम से जाना जावे। आज कल हमारे देश में इस मंत्रालय को शिक्षा मंत्रालय तथा इसके मन्त्री को मानव संसाधन विकास मन्त्री कहा जाता है। इस मंत्रालय के नामकरण के सम्बन्ध में ऋग्वेद में उल्लिखित कुछ मन्त्र इस प्रकार दिए गए हैं

आ देवानामभव: केतुरग्ने मन्द्रो विश्वानि काव्यानि विद्वान्॥ ऋग्वेद 3.9.17॥ **अग्निविश्वानि काव्यानि विद्वान्॥** ऋग्वेद 3.9.17॥ **राथीरऋतस्य बृहतो विचर्षणरग्निर्देवानामभवत् पुरोहितं॥** ऋग्वेद 3.2.8॥ **आ होता मन्द्रो विदथान्यस्थात्सत्यो यज्वा कवितम: स वेधा:॥** ऋग्वेद 3.14.1॥ **जुषानो अग्ने प्रति हर्य में वचो विश्वानि विद्वानन्वयुनानी सुक्रतो॥** ऋग्वेद 10.122.2॥ **अग्निर्जातो अथर्वणा विदद्विश्वानि काव्या॥** ऋग्वेद 10.29.5॥

इन मन्त्रों में स्पष्ट होता है कि वेद शिक्षा मंत्रालय के लिए अग्नि शब्द को ही प्रमुख रूप से नाम देता है। इस प्रकार के विशेषण के प्रयोग मात्र से ही मंत्रालय का कार्य स्पष्ट हो जाता है। यह जो अग्नि शब्द दिया गया है, इस शब्द का अर्थ है प्रकाशित करने वाला तथा जो आगे ले जाने का कार्य करे। हम देखते हैं कि जहां अग्नि जल रही हो, वहां प्रकाश अवश्य ही होता है। इसलिए जिस मंत्रालय से प्रजा को ज्ञान का प्रकाश मिले उस मंत्रालय को अग्नि की संज्ञा दी जावे तो यह पूर्णतया सार्थक ही होगी।

हम जब यज्ञ करते हैं तो जो पदार्थ हम यज्ञ ही आहुतियों में डालते हैं, वह पदार्थ यज्ञ की अग्नि में जाते हैं तथा यह अग्नि इन पदार्थो को आगे ले जाने का कार्य करती है, दूर दूर तक ले जाती है। इस प्रकार से यज्ञ के लाभ दूर-दूर तक के प्राणियों को मिलते हैं और शिक्षा की अग्नि, उस प्राणी को, जो शिक्षा प्राप्त करने का कार्य कर रहा है, शिक्षा का तेज एसा होता है, शिक्षा की अग्नि इस प्रकार की होती है कि वेद अथवा ज्ञान के ग्रहण के कारण उसे ग्रहण करने वाले की ख्याति दूर-दूर तक चली जाती है। ठीक उस प्रकार यह ज्ञान उसे आगे ले जाता है जिस प्रकार अग्नि आगे ले जाने का कार्य करती है। इसलिए इस विभाग का नाम अग्नि देना सार्थक है। अग्नि संज्ञा से इस विभाग को बुलाये जाने का वेद ने आदेश दिया है। वेद ने तो इसे केवल अग्नि ही नहीं बल्कि जातवेदा अग्नि कहा है, जो अग्नि के गुणों को और भी अधिक प्रकाशित करता है। इसलिए वेदानुसार शिक्षा मंत्रालय को जातवेदा अग्नि नाम से संज्ञा दी है।

वेद के अनुसार इस जातवेदा अग्नि के मन्त्री के गुणों को इन मन्त्रों के शब्द स्पष्ट करते हैं कि इस मंत्रालय के मन्त्री के लिए यह आवश्यक है कि वह सब प्रकार के काव्यों को सब प्रकार के ज्ञान को, सब प्रकार की शिक्षाओं का ज्ञाता हो। उसने सब प्रकार के ज्ञान में पूर्णता प्राप्त कर रखी हो क्योंकि जब स्वयं पूर्ण होगा तब ही वह दूसरों को पूर्ण बनने व बनाने के लिए प्रेरित कर सकेगा, जहां कहीं कुछ कमी होगी, कुछ व्यवधान होगा, उसे वह दूर करने के आदेश देगा। वह सब प्रकार के ज्ञानों का पालक हो। उसमें यह इच्छाशक्ति हो कि वह सब प्रकार के ज्ञानों को आगे ले जाने का यत्न करने वाला हो। शिक्षा मन्त्री के लिए यह आवश्यक है कि वह वेदवाणी का पति हो अर्थात सम्पूर्ण वेद ज्ञान का वह आधिकारिक विद्वान बन चुका हो, उसका वह स्वयं आचार्य हो तथा सब ज्ञानों का वह वाचस्पति अर्थात् विशेषज्ञ हो। इस प्रकार का मन्त्री शिक्षा मंत्री होगा तो वह एक सहायक के रूप में शिक्षा का सर्वत्र प्रचार ही नहीं, प्रसार करने में भी सफल होगा। अत: वेद के अनुसार प्रत्येक देश के इस मंत्रालय में धुरंधर शिक्षाविद ही नियुक्त किये जावें, जिससे सम्पूर्ण प्रजा का कल्याण होगा।

- 104, शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी-201010, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, दूरभाष-0120-2773400

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां कई वर्षो से पधार रहे है यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष **1000/-** रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अप्रिथधक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि जन्मस्थान से जुड़ सकते हैं। 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक

सत्यानन्द मुंजाल	**शिवराजवती आर्या**	**रामनाथ सहगल**
(मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)	उप-प्रधाना	(मन्त्री)

वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा

❑ डॉ. शारदा गुप्ता

आज के मानव-हृदय के सूनेपन को नष्ट करके उसे अनुराग के माधुर्य से आप्लावित करने की सामर्थ्य यदि कहीं है तो वह इसी दृष्टिकोण में है जिसे 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के नाम से जाना जाता है। भारतीय-भ्रातृत्व-कल्पना को मूर्त्तरूप देने का प्रबलतम सहायत्व इसी 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का है। यह एक ऐसा बन्धन है जिसमें बंधकर प्रत्येक प्राणी सुखी तथा स्वच्छन्द रह सकता है।

आज प्राणी उस ओर से विमुख होकर 'स्व' एवं 'पर' के झूले में झूलने के कारण ही बहुविध कष्ट भोग रहा है। 'स्व' और 'पर' की परिभाषा की संकीर्णता को त्याज्य मानकर 'वसुधैव-कुटुम्बकम्' के अङ्गीकरण एवं स्वीकरण द्वारा ही मनुष्य वर्तमान परिस्थितियों में अपने अस्तित्व को बनाए रख सकता है। आज के मानव ने अहम् के आसव का पान कर लिया है इसीलिए परिस्थितियों की भिन्नता के आधार पर मानव दूसरे मानव के बीच अन्तर की, भेद की मिथ्या कल्पना कर बैठा है। यदि मानव अपनी दृष्टि से व्यक्ति का भाव निकाल कर समष्टि का भाव समावित कर ले तो उसे यह सतय अनुभूत होने लगेगा कि मानव मानव में कोई सात्विक भेद नहीं है, सभी प्राणी-जगत् में एक ही चेतना से परिव्याप्त है।

'वसुधैव कुटुम्बकम' संसार को एक इकाई में देखने का प्रयत्न है। व्यक्ति की समाष्टि में पर्यवसान का महाघोष 'वसुधैव कुटुम्बकम्' में उद्घोष में है। यह उद्घोष छान्दोग्य-उपनिषद् के 'भूमा'' के समान है। जो सुख और अमृत का प्रतीक है। जिस प्रकार आत्मत्व सर्वव्यापकता का द्योतक है उसी प्रकार 'वसुधैव कुटुम्बकम' भावना भी सार्वभौम तथा सर्वव्यापक है और वही विश्वबन्धुत्व की प्रेरक हैं। यदि मनुष्य को आनन्द के परमोदधि मेंग गोते लगाने हैं तो उसको संकुचित और संकीर्ण भावना से हटकर समष्टि, समदृष्टि तथा समसृष्टि रूपी पर्वत उतुंग तुंग पर पादन्यास करना होगा।

वास्तविक सुख तो सर्वात्मभाव में ही निहित है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का मूल मन्त्र ही मानव और मानवता जैसी सर्वोपरि भावना का उद्भव स्रोत बन सकता है। स्वार्थ के प्रतीक स्वत्व की संकीर्णता की परिणति तभी उदारता की कोटि में हो सकती है, जब वह अपने सुख को सभी के सुख में देखे।

'वसुधैव कुटुम्बकम्' के प्रभाव की प्रतीति तभी हो सकती है जब सारा विश्व एक नीड़ के तुल्य प्रतीत होने लगे और मनुष्य स्वयं अखण्ड आनन्द की अनुभूति करने में सक्षम होने के साथ ही साथ जगती के अन्य प्राणियों को भी सुखी एवं आनन्दमय बनाने की अद्भुत सामर्थ्य से अनुस्यूत हो सके।

सामाजिक प्राणियों में सुख की आशा बंधाने वाला एकमात्र 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का ही मन्त्र हो सकता है। इसी से दुःखी मनुष्य का त्राण हो सकता है। यही एक ऐसा मन्त्र है जिसको अपनाने से व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और संसार सभी को आनन्द प्राप्त हो सकता है।

भारतीय संस्कृति का मूलस्तम्भ प्रत्येक प्राणी को समान रूप से समझना, उसके सुख-दुःख को अपना समझना तथा सभी को अपनाकर चलना है और इस प्रकार ही समान भावना तथा सम्पूर्ण संसार को कुटुम्बवत् समझना।

जीवन की पूर्णता तभी संभव हो सकती है जब मनुष्य में समता की भावना साकार रूप धारण कर ले। इसको ही भूमा कहते हैं और भूमा पूर्णता का ही नाम है। लोककल्याण और शाश्वत सुख, सम्पूर्ण पृथिवी को एक पारिवारिक दृष्टिकोण के सन्निवेश में देखने का ही नाम भूमा है। परम व्यापक होने के कारण समुद्र जिस प्रकार चारों ओर से उमड़ता दिखाई पड़ता है तथा उसमें उठने वाली लोल-लहरियों के मध्य ज्योतिष्मान् मणिसमूहकरण बिखरते हुए दिखाई पड़ते हैं। उसी प्रकार 'वसुधैवकुटुम्बकम्' के उदात्तभाव इस संसार में हाहाभूत करते हुए प्राणीसमूह के लिए सुखद अनुभूतियों के क्षणों को बटोर कर ला सकते हैं। उसी में अत्यन्त व्यापक समरसता के बीज निहित हैं। आज का मानव अनेकानेक जटिलताओं और वैषम्यों से ग्रस्त है। जीवन के विरोधों के परिहार का आधार एकमात्र सबको समान रूप से देखना है।

'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना ही उस प्रेम की उद्भावना करता है जो हिंसा की प्रवृत्ति को समूल नष्ट कर सकती है और वही प्रवृत्ति जीवन की विभीषिका एवं भीषणता को समाप्त करके मानव को शान्ति तथा आनन्द प्रदान कर सकती है।

संघर्ष-द्वेष-ईर्ष्या की कुत्सित भावनाओं ने ही इस सम्पूर्ण विश्व को संकीर्ण एवं कुण्ठित बना दिया है। ऐसे समय में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना ही मानवमात्र की रक्षा में समर्थ हो सकती है।

अपने सुख और अपने दुःख से ऊपर उठकर समस्त जगत् के सुख और दुःख को अपना समझकर जीवनयापन करने का नाम ही 'वसुधैव कुटुम्बकम्' है। एकरस होकर चरम भाव में उन्मज्जन करना जीवन-लहरों के बिखराव को समेटने के उत्कट मनोद्गार के रूप में करना तथा विश्व प्रेम का साक्षात्कार करना ही 'वसुधैव कुटुम्बकम्' है।

'वसुधैव कुटुम्बकम्' की मनः स्थिति एक ऐसी परम अवस्था है जो 'पर' के भेद को तिरोहित करती है, 'निजत्व' की अवहेलना करती है, स्वार्थमूला प्रवृत्ति एवं प्रकृति का विध्वंस करती है और परार्थमूलक उद्भावनाओं को प्रेरित करती है, सर्वत्र एक चेतनता के विलास को अपलक देखने की सामर्थ्य पैदा करती है।

स्वत्व-निजत्व तो अस्थिर सुख और क्षणिक आनन्द के दायक हैं, मृगमरीचिका से अधिक कुछ नहीं हैं। समस्त प्राणी जगत् से एकाकार होकर गौरवमय आनन्द की अनुभूति तभी होती है जब व्यक्ति के हृदय में समग्रता का भाव उदित होता है, परत्व में स्वत्व की अन्वेषणा और गवेषणा का परिक्रमण परमावास्था में पहुँचता है।

आज के भौतिक संघर्षरत मानव का विज्ञानमय चिन्तन उसके मस्तिष्क के विकास का सूचक है परन्तु हृदय-पक्ष के एकमात्र औदार्यपूर्ण भाव ही 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के रूप में आविर्भूत होकर प्राणी को प्राणी से स्नेह और प्रेम के उद्रेक के साथ प्रीति-रस से भरकर सदैव परस्पर सौहार्द के कर बन्धन में अनुस्यूत करता है।

समस्त मानवजाति को एक इकाई का रूप प्रदान करने वाली क्षमता का नाम ही 'वसुधैव कुटुम्बकम्' है। अपना-पराया, राष्ट्र-वर्ग, जाति-धर्म, वर्ग-वर्ण के भेदभाव को मिटाने की अपरिमित शक्ति जिस भाव में उसका नाम है 'वसुधैव कुटुम्बकम्'। समरसता का अभाव विषमता को जन्म देता है। इसी कारण मानव सुख-दुःख के झमेलों में उलझा रहता है। मैं-मेरा, तू-तेरा, पाप-पुण्य, ऊँच-नीच, शापित-तापित, अच्छा-बुरा

आदि का विमर्शन संकीर्णता एवं अल्पता का द्योतक हैं जब मनुष्य समस्त भूमण्डल में एक पारिवारिक अनुभूति करने लगता है तब फिर उसे कहीं भी विषमता के दर्शन नहीं होते और उसको कोई भी पराया प्रतीत नहीं होता। उसको सभी एक कुटुम्ब के समान दिखाई देते हैं। तब उसे न कोई तापित प्रतीत होता है और न कोई शापित, सर्वत्र जीवन-वसुधा समता प्रतीत होने लगती है। सभी पदार्थ एवं प्राणी आत्मवत् प्रतीत होने लगते हैं, सभी आत्मीय प्रतीत होने लगते हैं, कोई भी परत्व नहीं रहता, कोई स्वल्पत्व नहीं रहता, सभी में समभाव, समदृष्टि का आभास होने लगता है।

जो लोग अपने ही सुख और दुःख से पुलकित रहते हैं वे न तो स्वयं सुख और शांति से अपना जीवन यापित करते हैं और न ही दूसरे को सुखपूर्वक जीने देते हैं। परन्तु उनके लिए सम्पूर्ण वसुधा कुटुम्ब के समान होती है जिनका चरित उदार होता है। जिनकी विचारणा शक्ति एवं क्रिया-शक्ति में उदारता का दृष्टिकोण होता हौ। उदार दृष्टिकोण उसी का हो सकता है जो समस्त प्राणियों को अपने परिवार के सदस्य के समान समझता है। जिस की सोच संकीर्ण होती है, जिसमें अपने-पराए का भाव बना रहता है, वह कभी भी विश्वबन्धुता की अनुभूति एवं आनन्द का लाभ नहीं उठा सकता है। सामाजिक सुख-शान्ति का प्रजापति 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का भाव है। सामाजिक कल्याण 'स्वत्वभाव' में नहीं प्रत्युत 'समत्वभाव' में है। अपने 'अहम्' की चेतनता में सबको समेट लेना ही 'वसुधैव कुटुम्बकम्' है। स्वार्थ से ऊपर उठकर परार्थ के मार्ग को प्रशस्त करने वाला भाव 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के रूप में ही है।

अन्ततः यही लिखा जा सकता है कि 'वसुधैव कुटुम्बकम्' सृष्टि का प्रत्येक कण और प्रत्येक अणु-परमाणु अपना ही है। सभी प्राणियों को अपने से भिन्न मानना सभी प्राणियों का हित करना, कल्याण करना, किसी अन्य की सेवा करने का नाम नहीं है अपितु अपना ही एकांतिक एवं आत्यंतिक सुख साधन का नाम है। अतः विश्व के सौन्दर्य को अनन्त एवं अखण्ड बनाए रखने के प्रबलतम साक्ष्य का नाम ही 'वसुधैव कुटुम्बकम्' है।

– संस्कृत विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू।

મહર્ષિ દયાનન્દજીની પવિત્ર જન્મભૂમિ ટંકારામાં આપના નામને કાયમી યશ મળે તેવી યોજના

આપ નીચેની કોઈપણ એક અથવા વધારે યોજનામાં, યોજના દીઠ રૂ. ૧૧૦૦૦-૦૦ (અગિયાર હજાર) રૂપિયાનો ફાળો આપી યશના ભાગી બની શકો છો

(૧) ભોજન સેવા તિથિ, (૨) યજ્ઞ સેવા તિથિ, (૩) ગૌ-સેવા તિથિ, (૪) ઔષધ સેવા તિથિ

આ માટે કોઈ એક અથવા વધારે યોજના મુજબ પ્રત્યેક યોજના માટે અગિયાર હજાર રૂપિયા દાનામાં આપો. આપ આપના પરિવારના જે તે સદસ્યની જે તે તિથિ (જન્મ, વિવાહ અથવા પુણ્ય તિથિ) લખાવશો તે તિથિએ આપના તરફથી સેવા થશે. સંસ્થામાં બોર્ડ પર નામ લખવામાં આવશે. તિથિ અગાઉં આપનો જાણ કરવામાં આવશે.

આશા છે કે તિથિ દાન આપીને દયાનન્દજીની પવિત્ર જન્મભૂમિ ટંકારામાં આપનું નામ કાયમી રીતે યશસ્વી કરવાની આ અમુલ્ય તકનો લાભ ચોક્કસ ઉઠાવશો.

સમ્પર્ક કરોઃ- શ્રી મહર્ષિ દયાનન્દ સરસ્વતી સ્મારક ટ્રસ્ટ, દ્વારા - આર્યસમાજ અનારકલી, મન્દિર માર્ગ, નવી દિલ્હી ૧૧૦૦૧૧
ફોનઃ- ૦૧૧-૨૩૩૬૦૦૫૯, ૨૩૩૬૨૧૧૦

गौ-दान : महा-दान

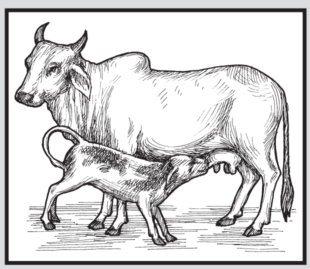

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से **20,000/-** रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

સામ્રાજ્ઞી ભવ સ્વપ્ર - ઋષિ દયાનન્દનું

રમેશ મહેતા (ટંકારામિત્ર)

મહર્ષિ દયાનન્દજી પોતાના કાલજયી ગ્રન્થ સત્યાર્થપ્રકાશના ૩ જા સમ્મુલ્લાસમાં લખે છે –

"પ્રશ્ન - શું સ્રી અને શૂદ્ર પણ વેદ ભણે? જો એ ભણશે તો પછી અમે શું કરીશ? અને એમને ભણાવવામાં પ્રમાણ પણ નથી. જુઓ આ નિષેધ છે - *સ્ત્રીશૂદ્રૌ નાધીયતામિતિ શ્રુતેઃ* - સ્રી અને શૂદ્ર ન ભણે એ શ્રુતિ છે.

ઉત્તર – બધાં સ્રી અને પુરુષને અર્થાત્ મનુષ્યમાત્રને ભણવાનો અધિકાર છે. તમે કૂવામાં પડો અને આ શ્રુતિ તમારી કપોલ-કલ્પનાથી બની છે, તે કોઈ પ્રામાણિક ગ્રન્થની નથી. સર્વ મનુષ્યોને વેદાદિ શાસ્રો ભણવા અને શ્રવણ કરવાનો અધિકાર છે. તેના પ્રમાણમાં યજુર્વેદના છવ્વીસમાં અધ્યાયનો બીજો મન્ત્ર છે :-

યથેમાં વાચં કલ્યાણીમાવદાનિ જનેભ્યઃ।

બ્રહ્મરાજન્યાભ્યાં શૂદ્રાય ચાર્યાય ચ સ્વાય ચારણાય

પરમેશ્વર કહે છે યથા જેમ હું *જનેભ્યઃ* સર્વ મનુષ્ય માટે *ઈમામ્* આ *કલ્યાણીમ્* કલ્યાણ અર્થાત્ સંસાર અને મુક્તિનું સુખ આપનારી *વાચમ્* ઋગ્વેદાદિ ચારે વેદની વાણીનો *આવદાનિ* ઉપદેશ કરું છું.

અહીં કોઈ એવો પ્રશ્ન કરે કે *જન* શબ્દથી દ્વિજોનું ગ્રહણ કરવું જોઈએ, કેમકે સ્મૃત્યાદિ ગ્રન્થોમાં બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય અને વૈશ્યને જ વેદો ભણવાનો અધિકાર લખ્યો છે, સ્રી અને શૂદ્રાદિ વર્ણોને નહીં.

ઉત્તર :- *બ્રહ્મરાજન્યાભ્યામ્* ઈત્યાદિ જુઓ, પરમાત્મા સ્વયં કહે છે કે મેં બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય *આર્યાય* વૈશ્ય *શૂદ્રાય* અને *સ્વાય* પોતાના ભૃત્ય કે સ્રી આદિ *અરણાય* અને અતિશૂદ્રાદિને માટે પણ વેદોનો પ્રકાશ કર્યો છે. અર્થાત્ સર્વ મનુષ્ય વેદોને ભણી-ભણાવી, સાંભળી-સંભળાવીને, વિજ્ઞાન વધારી સારી વાતોનું ગ્રહણ અને નઠારી વાતોનો ત્યાગ કરી, દુઃખોથી છૂટી, આનન્દને પ્રાપ્ત થાઓ. હવે કહો તમારી વાત માનીએ કે પરમાત્માની? પરમેશ્વરની વાત અવશ્ય માનનીય છે, તમારી નહીં. આમ હોવા છતાં પણજો કોઈ માનશે નહીં તો નાસ્તિક કહેવાશે. કેમ કે *નાસ્તિકો વેદનિન્દકઃ* વેદોનો નિંદક અને વેદોને નહીં માનનાર નાસ્તિક કહેવાય છે.

.... અને જે સ્રીઓને ભણાવવાનો નિષેધ કરો છો, તે તમારી મૂર્ખતા, સ્વાર્થતા અને નિર્બુદ્ધિતાનો પ્રભાવ છે. જુઓ, વેદમાં કન્યાઓને ભણાવવાનું પ્રમાણ :-

"બ્રહ્મચર્યેણ કન્યાઉ યુવાનં વિન્દતે પતિમ્।।

અથર્વ. અનુ. ૩ પ્ર. ૨૪. કાં. ૧૧, અ. ૩, મં. ૧૮

જેમ બાળકો બ્રહ્મચર્ય સેવનથી પૂર્ણ વિદ્યા અને સુશિક્ષાને પ્રાપ્ત થઈ યુવતી, વિદુષી, પોતાને અનુકૂળ, પ્રિય, સદેશ સ્રીની સાથે વિવાહ કરે છે, તેમ *કન્યા* કુમારી *બ્રહ્મચર્યેણ* બ્રહ્મચર્ય-સેવનથી વેદાદિ શાસ્રોને ભણી પૂર્ણ વિદ્યા અને ઉત્તમ શિક્ષાને પ્રાપ્ત યુવતી થઈ પૂર્ણ યુવાવસ્થામાં પોતાને સદેશ પ્રિય વિદ્વાન્ *યુવાનમ્* અને પૂર્ણ યુવાવસ્થાવાળા પુરુષને *વિન્દતે* પ્રાપ્ત થાય, એથી સ્રીઓએ પણ બ્રહ્મચર્ય અને વિદ્યાનું ગ્રહણ અવશ્ય કરવું જોઈએ.

પ્રશ્ન :- શું સ્રીઓ પણ વેદો ભણે?

ઉત્તર :- અવશ્ય, જુઓ શ્રૌતસૂત્રાદિમાં –*ઈમં મન્ત્રમ્ પત્ની પઠેત્* – અર્થાત્ સ્રી યજ્ઞમાં આ મન્ત્ર ભણે. જો વેદાદિ શાસ્રોને ન ભણી હોય તો યજ્ઞમાં સ્વર સહિત મન્ત્રોનું ઉચ્ચારણ અને સંસ્કૃતભાષણ કેવી રીતે કરી શકે? ભારતવર્ષની સ્રીઓમાં ભૂષણરૂપ ગાર્ગી આદિ વેદાદિ શાસ્રો ભણી પૂર્ણ વિદુષી થઈ હતી. એ શતપથબ્રાહ્મણમાં સ્પષ્ટ લખ્યું છે. જો પુરુષ વિદ્વાન્ હોય અને સ્રી અવિદુષી અને સ્રિ વિદુષી હોય અને પુરુષ અવિદ્વાન્ હોય, તો નિત્યપ્રતિ દેવાસુર સંગ્રામ ઘરમાં મચ્યો રહે, તો પછી સુખ કયાં? એટલા માટે જો સ્રી ન ભણે, તો કન્યાઓની પાઠશાળાઓમાં અધ્યાપિકા કેવી રીતે બની શકે? તથા રાજકાર્ય, ન્યાયાધીશત્વાદિ, ગૃહાશ્રમનાં કાર્ય – જેમ કે પતિને સ્રીએ અને સ્રીને પતિએ પ્રસન્ન રાખવો, ઘરનાં સર્વ કાર્ય સ્રીને આધીન રહેવા વિગેરે કામ વિદ્યા વિના ઉત્તમ પ્રકારે કદી પણ ઠીક ઠીક થઈ શકતા નથી.

જુઓ, આર્યાવર્ત્તના રાજપુરુષોની સ્રીઓ ધનુર્વેદ અર્થાત્ યુદ્ધવિદ્યા પણ સારી પ્રકારે જાણતી હતી. કેમ કે જો ન જાણતી હોત તો કૈકેયી આદિ દશરથ આદિની સાથે યુદ્ધમાં કેમ કરી જઈ શકત? એથી બ્રાહ્મણીએ સર્વ વિદ્યા તથા રાજવિદ્યાવિશેષ, વૈશ્યાએ વ્યવહારવિદ્યા અને શૂદ્રાએ પાકાદિ સેવાની વિદ્યા અવશ્ય શીખવી જોઈએ."

મહર્ષિ દયાનન્દે જોયેલું સ્વપ્ર પશ્ચાત્વર્તી આર્યોએ પુરુષાર્થ પૂર્વક સાકાર કર્યું છે. ગુજરાતમાં પણ પં. આનન્દ પ્રિયજીએ વડોદરામાં આર્ય કન્યા મહાવિદ્યાલયની સ્થાપના કરીને સંસારને અનેક વિદુષી સન્નારીઓની ભેટ આપી છે. તાજેતરમાં જ જેમનું અવસાન થયું તે અનિલાદેવી આર્ય આમ તો પં. જ્ઞાનેન્દ્ર સિદ્ધાન્તભૂષણના પત્ની તરીકે પ્રસિદ્ધ હતા. પણ તેઓ વડોદરા ગુરુકુલના સ્નાતિકા હતા અને મુમ્બઈમાં ધનાઢ્ય પરિવારોમાં મહિલાઓને સંસ્કૃત ભણાવવા જતા તો સાથે સાથે મુમ્બઈની આર્યસમાજોમાં તેમના પ્રવચનો પણ યોજાતા.

એકવાર અમદાવાદમાં પુસ્તકમેળામાં આર્યસમાજના સ્ટોલ પર બેઠો હતો. એક બહેને આવીને ઋગ્વેદ સંહિતા હાથમાં લઈ જોવા લાગ્યા. મેં કહ્યું કે આતો માત્ર સંસ્કૃતમાં છે, હું તમને એનો હિન્દી અનુવાદ બતાવું. તો કહે કે મને સંસ્કૃત આવડે છે. મને આશ્ચર્ય થયું, નામ પુછતા જવાબ મળ્યો કે તેમનું નામ નિર્મળાબેન હતું.

બહુ ઓછા લોકો જાણે છે પોરબંદરના શેઠ નાનજી કાલિદાસ મહેતાને બે પુત્રીઓ હતી. લોકો તો માત્ર સવિતા બહેનને જ જાણે છે. તરત જ મેં કહ્યું કે તમે તો શેઠ નાનજીભાઈના દિકરી છો અને ખટાઉ પરિવારમાં

પરણ્યા છો. વડોદરા ગુરુકુલના સ્નાતિકા છો તેમજ મુમ્બઈના પં. વિભુદેવ શાસ્ત્રી પણ તમારે ત્યાં ભણાવવા આવતા.

ઈ. સ. ૧૯૮૯નું વર્ષ અમદાવાદમાં આર્યસમાજના ઇતિહાસમાં એક સીમાચિન્હ બની રહ્યુ છે. સુપ્રસિદ્ધ આર્યશ્રેષ્ઠી પરિવારના શ્રી કિશોર ગોયલે મને કહ્યું કે પાણિની કન્યા મહાવિદ્યાલયની આચાર્ય વિદુષી પ્રજ્ઞાદેવીને અમદાવાદમાં બોલાવીને તેમની પાસે યજુર્વેદ પારાયણ યજ્ઞ કરાવવો છે. મેં વિનંતી કરી કે વેદપાઠ માટે પણ ગુરુકુલની જ બ્રહ્મચારિણીઓને બોલાવો અને સમગ્ર કાર્યક્રમ માત્ર અને માત્ર બહેનો દ્વારા જ થાય એવું ગોઠવો. તેઓ તૈયાર થયા. મને કહે કે જેમ યોગ્ય લાગે તેમ કરો, કાર્યક્રમ દ્વારા આર્યસમાજનો પ્રચાર થવો જોઈએ. કાર્યક્રમ નીચે પ્રમાણે ગોઠવ્યો –

- પારાયણયજ્ઞ શ્રી કિશોર ગોયલજીની જ એક કંપની દ્વારા નિર્માણાધીન વાણિજ્ય ભવનના પરિસરમાં ગોઠવવો
- વર્તમાન-પત્રોમાં વિજ્ઞાપનને બદલે પ્રેસ કૉન્ફરન્સ દ્વારા વ્યાપક પ્રસિદ્ધિ મળે તેવું આયોજન કરવું.
- પારાયણયજ્ઞના આચાર્ય પદે અને વેદપાઠી તરીકે માત્ર બહનો જ રહેશે તે વિષયની પ્રસિદ્ધિ માટે ભાર મૂકવો.

શ્રી કિશોર ગોયલને મારી યોજના કહી, તેમણે કહ્યું કે ખર્ચની ચિંતા ન કરો, કામ યોગ્ય રીતે થવું જોઈએ. પત્રકારોને બોલાવવાથી લઈને પત્રકાર પરિષદનું આયોજન કરવાની જવાબદારી ટંકારામાં જ થોડો સમય રહીને ભણેલા મિત્ર મહેશ આર્યને સોંપી.

શ્રી કિશોરજીએ મને પણ વેદપાઠી તરીકે બેસવાનો આગ્રહ કર્યો, પણ મેં કહ્યું કે જ્યારે હું પોતે જ એ વાતનો વ્યાપક પ્રચાર કરું છું કે યજ્ઞના આચાર્ય અને વેદપાઠી તરીકે માત્ર બહેનો જ રહેશે, ઉપદેશકો અને ભજન ગાવા માટે પણ બહેનો જ રહેશે તો હું પણ વેદપાઠી તરીકે નહીં બેસું. સમગ્ર કાર્યક્રમમાં મંચ ઉપર ક્યાંય કોઈ પુરુષને સ્થાન નથી આપવું. પરિણામે અમદાવાદના કેટલાક વિદ્વાનો અને આર્યસમાજના પદાધિકારીઓ ખૂબ જ નારાજ થયા હતા.

પ્રજ્ઞાદેવીજી અને બ્રહ્મચારિણીઓના આવાસ-નિવાસની વ્યવસ્થા શ્રી કિશોર ગોયલના નિવાસ સ્થાને કરવામાં આવી. પ્રજ્ઞાદેવીજીના પધાર્યા પછી પહેલી પ્રેસવાર્તા અમદાવાદની રિલિફ સિનેમાની સાથેની હોટેલ કેપ્રીમાં રાખવામાં આવી. પત્રકારોએ સ્ત્રિઓના વેદ ભણવા-ભણાવવા, યજ્ઞાદિ કર્મકાંડ કરવા કરાવવા વિષય પર અનેક પ્રશ્નો પુછ્યા. આચાર્યાજીના ઉત્તરોથી લગભગ બધાં જ પત્રકારો સંતુષ્ટ થયા પરિણામ એ આવ્યું કે બીજે દિવસે અમદાવાદથી પ્રકાશિત તથા ગુજરાતી અને અંગ્રેજી બધાં જ વર્તમાનપત્રોમાં બોલ્ડ હેડલાઈન સાથે છેલ્લા મુખ્ય પૃષ્ઠપર વ્યાપક પ્રસિદ્ધિ મળી.

વર્તમાન પત્રોમાં મળેલ વ્યાપક પ્રસિદ્ધિને કારણે યજ્ઞ ચાલતો હતો દરમ્યાન અમદાવાદના જાણીતા પૌરાણિક પંડીતજી યજ્ઞ સ્થળે પોતાના બે શિષ્યો સાથે આવ્યા. બ્રહ્મચારિણીઓનો વેદપાઠ સાંભળીને કહે કે આવી રીતે તો ગમે તે કોઈ વેદપાઠ કરી શકે, આમાં નવું શું છે – તો મારી વિનંતીથી આચાર્યાજીએ બ્રહ્મચારિણીઓને ઈશારો કર્યો અને શરુ થયો અષ્ટવિકૃતિ વેદપાઠ - ઘનપાઠ, જટાપાઠ, માલાપાઠ વિગેરે. પૌરાણિક પંડીતજીએ પોતાના બંને કાનમાં આંગળા ખોસ્યા અને બોલ્યા હરિ... હરિ... ઘોર પાપ. અને ત્યાથી ભાગ્યા.

બીજા દિવસે બીજા એક પૌરાણિક વિદ્વાન્ પં. વિષ્ણુદેવ પધાર્યા. તેઓ કન્યાઓનો વેદપાઠ સાંભળી અત્યન્ત પ્રસન્ન થયા, આંખોમાં આંસુ આવી ગયા. યજ્ઞસત્રના સમાપન પછી તેમને બે શબ્દ કહેવાની વિનંતી કરી તો તેમણે કહ્યું કે આજે તમે ઋષિ દયાનન્દનું સ્વપ્ન સાકાર કર્યું છે.

આવી જ રીતે હું જ્યારે પૂર્વ આફ્રિકાના દારેસલામ નગરની આર્યસમાજની સેવામાં હતો ત્યારે પુષ્ટી માર્ગીય વૈષ્ણવ સમાજના વિદુષી ઇન્દિરા બેટીજી પધાર્યા હતા. તેઓ પોતાની ભાગવદ્ કથામાં વારંવાર કહેતા કે આપણું ધર્મપુસ્તક વેદ છે અને ધર્મનું નામ વૈદિક ધર્મ છે. એકવાર એમની સાથે ચર્ચા કરવાનો મોકો મળ્યો તો વેદની વાત કરવા બદલ મેં એમને અભિનન્દન આપ્યા. તો મને કહે કે હું જ્યારે બનારસમાં વેદ ભણવા માટે ગઈ તો સ્ત્રી હોવાને કારણે ત્યાંના પંડિતો મને વેદ ભણાવવા રાજી નહોતા.

પ્રત્યુત્તરમાં મેં કહ્યું – માતાજી મને એટલા માટે જ દયાનન્દ અને આર્યસમાજ ઉપર ગર્વ છે, અને એમના જ પ્રભાવને કારણે એજ બનારસમાં આર્યસમાજના ગુરુકુલ (પાણિની કન્યા મહાવિદ્યાલય – વારાણસી)માં કન્યાઓને વેદનું સર્વાંગી જ્ઞાન આપવામાં આવે છે.

ઇન્દિરા બેટીજીએ પણ સ્વીકાર કર્યો કે હા આર્યસમાજ બાકીના સમાજ કરતા આ વિષયમાં સૈંકડો વર્ષ આગળ છે.

છેલ્લે એક વાત. કદાચ સમગ્ર વેદીક વિદ્વાનોમાં ઋષિ દયાનન્દ એકમાત્ર – પહેલા અને છેલ્લા છે જેમણે વિવાહ સંસ્કારની સમાપ્તિમાં કન્યાને આશિર્વાદ વચનમાં કહ્યું છે સામ્રાજ્ઞી ભવ – મહારાણી બનજે.

આજે દુર્ભાગ્યે જે મહાપુરુષ સ્ત્રીને પત્ની નહીં પણ ગૃહસ્થાશ્રમની મહારાણી તરીકે જોઈ હોય એ મહાપુરુષને આજે પણ સમાજની મોટાભાગની સ્ત્રિઓએ એ સ્થાન નથી જેના એ અધિકારી છે.

समाचार दर्पण

टंकारा स्थित
अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय के ब्रह्मचारियों का कीर्तिमान स्थापित

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा के अन्तर्गत संचालित उपरोक्त उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी जहां महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बन्धित कक्षाओं का पठन-पाठन करते है। वहीं दूसरी ओर आर्ष पद्धति से उपदेशक/कर्मकाण्ड में निपूर्ण ब्रह्मचारी भी तैयार किये जाते हैं। जिसमें प्रवचन/भाषण देने की कला, यज्ञ पद्वति एवम् विभिन्न संस्कारों को करवाने में निपुण किया जाता है। जहां उन्हें आर्ष ग्रन्थों के माध्यम से वेद प्रचारक के रूप में तैयार किया जाता है वहीं टंकारा एवम् उनके आस पास स्वराष्ट्र की आर्य समाजो एवम् प्रमुख आर्य परिवारों में संस्कारों हेतु भेजा जाता है जिससे उनकी अभ्यास सिद्धी भी हो जाती है और वेद प्रचार का कार्य भी हो जाता है। इसके साथ ही जो ब्रह्मचारी भजन एवम् वाध्य संचालन में रूचि रखते हैं उन्हें भी तैयार किया जाता एवम् उपरोक्त कार्यक्रमों में वे भी साथ जाते हैं।

पिछले एक वर्ष में 225 ऐसे कार्यक्रमों में उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियों ने भाग लिया और अपनी अनुभव सिद्धी की। लगभग 2 दिन में एक कार्यक्रम वर्ष भर में का कीर्तिमान स्थापित किया। हम टंकारा ट्रस्ट की ओर से इन सभी ब्रह्मचारियों को सुभाषिश एवम शुभकामनाएं देते है आशा करते हैं कि वे निरंतर इसी प्रकार जब आर्य समाज के क्षेत्र में उतरेगें तो वेद प्रचार के कार्य से जुड़ते हुए स्वामी दयाननद के अधूरे सपनों को पूरा करने में सहयोगी बनेंगे।

आर्य कन्या गुरुकुल लुधियाना में वेदारम्भ व समावर्तन संस्कार सम्पन्न

आर्य कन्या गुरुकुल लुधियाना में 17वां वेदारम्भ व 13वाँ समावर्तन संस्कार को आयोजित किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता श्री जगजीव जी बस्सी ने की तथा मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती नविता जी पुरी (प्रि. के.वी.एम. स्कूल लुधियाना) पधारी। कुलपति महात्मा सत्यानन्द जी मंजाल की उपस्थिति में अध्यक्ष जी एवं मुख्य अतिथि जी का स्वागत गुलदस्ते भेंट किया गया। इस वर्ष 70 ब्रह्मचारी जिसमें छठी की 52 ब्रह्मचारी का वेदारम्भ व पंजाब बोर्ड की दसवीं की परीक्षा देकर जा रही 18 ब्रह्मचारी का समावर्तन संस्कार किया गया। मंचसंचालन ब्र. दीक्षा ने किया। ब्रह्मचारी ने वेदमन्त्रों, भजनों, भाषणों व योगासनों द्वारा सभा को मन्त्र मुग्ध कर दिया। कुलपति महात्मा सत्यानन्द जी मुंजाल ने कार्यक्रम की प्रशंसा की तथा सबके आगमन पर प्रसन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि परमात्मा हमें इससे भी अधिक शक्ति प्रदान करें जिससे हम आर्य समाज की सेवा कर सकें। उन्होंने सबको आशीर्वाद दिया सत्यार्थ प्रकाश की परीक्षा में विशेष स्थान प्राप्त करने वाली ब्रह्मचारी को पुरस्कृत किया। प्रधानाचार्या श्रीमती सतीश जी तलवार ने आए हुए सभी महानुभावों का धन्यवाद किया। समापन से पूर्व शांतिपाठ किया गया।

अग्निहोत्री परिवारों का सम्मान

आर्य पुरोहित सभा मुम्बई का 11वां वार्षिकोत्सव एवं दैनिक अग्निहोत्री (याज्ञिक) परिवार सम्मान समारोह बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस भव्य कार्यक्रम का शुभारम्भ वृहद यज्ञ से हुआ। श्री अरूण अब्ररोल ने कहा आर्य पुरोहित सभा मुम्बई ने अग्निहोत्र करने वाले याज्ञिक परिवारों का सम्मान करके एक सराहनीय कार्य किया है।

समारोह के अध्यक्ष श्री मिठाई लाल सिंह आर्य ने कहा इस प्रकार के यज्ञों का आयोजन तथा याज्ञिकों का सम्मान समय-समय पर होते रहना चाहिए। तत्पश्चात् लगभग 75 अग्निहोत्री (याजिक) परिवारों को प्रशस्ति पत्र एवं गायत्री मन्त्रांकिंत भगवा उपवस्त्र देकर सभा के अधिकारियों ने तथा सभी उपस्थित गणमान्य अतिथियों ने सम्मानित किया।

डॉ. श्वेतकेतु को हिन्दी सलाहकार समिति का सदस्य मनोनीत

वरिष्ठ आयु: चिकित्सक, संस्कृत निष्ठ विद्वान एवं विभिन्न सामाजिक, धार्मिक, क्षैक्षिक संस्थाओं से जुड़े आर्य समाज बिहारीपुर के मन्त्री डॉ. श्वेत केतु शर्मा को भारत सरकार गृह मंत्रालय के द्वारा केन्द्रीय हिन्दी सलाहकार समिति का सदस्य मनोनीत किया, डॉ. शर्मा का कार्यकाल तीन वर्ष रहेगा। डॉ. शर्मा विभिन्न सामाजिक, धार्मिक, शैक्षिक संस्थाओं के आजीवन सदस्य एवं महत्वपूर्ण पदों पर कार्य कर रहे हैं, आपने अनेको कार्य कलाओं के माध्यम से विभिन्न प्रकार की सामाजिक सेवा की है, आर्य समाज अनाथालय के अनाथ असहाय बच्चों की सेवा के साथ, समाज की विभिन्न विकृतियों, अन्धविश्वास व शैक्षिक विसंगतियों को दूर करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। लगभग 26 वर्षो से समाज की विभिन्न रूपों में सामाजिक सेवा में संलग्न है।

योग, ध्यान, साधना शिविर सम्पन्न

आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जम्मू कश्मीर में पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी के सान्निध्य में निःशुल्क योग, ध्यान, साधना शिविर का आयोजन किया गया जिसमें हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर, राजस्थान, दिल्ली, पानीपत, सोनीपत, उत्तराखण्ड तथा विहार आदि प्रान्तों से शिविरार्थियों ने भाग लिया। प्रातः काल डॉ. सुरेश साधकों को योगासन एवं प्राणायाम का प्रशिक्षण दिया। इस अवसर पर पूज्य महात्मा जी के ब्रम्हत्व में सामवेद पारायण-यज्ञ भी हुआ। मां सत्यप्रियायति, माता आनन्दायति और श्रीमती चंचल तथा अन्य शिविरार्थियों के समय-समय पर भजन होते रहे। आगामी शिविर 27 सितम्बर से 4 अक्तुबर तक लगेगा यह भी निर्णय लिया गया।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसारार्थ एवं आर्य समाज तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती की विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाने के लिए **आर्य समाज मन्दिर पटियाला** द्वारा आयोजित छह दिवसीय वार्षिकोत्सव एवं विश्वशान्ति गायत्री महायज्ञ पूर्ण सफलता एवं हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हो गया। इस अवसर पर मुख्य प्रवक्ता के रूप में वैदिक विद्वान आचार्य संजय याज्ञिक (मेरठ), डॉ. राम प्रकाश शर्मा (दिल्ली), आर्य सन्यासी स्वामी ब्रह्मवेश (पटियाला) तथा भजनोपदेशक श्री जगत वर्मा जी ने पटियाला के आर्यजनों को अपने सुग्राही पवित्र वेदव्याख्यानों एवं प्रेरणादायी सुमधुर भजनों से उपकृत किया।

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के तत्वावधान में
राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास/आत्मरक्षण शिविर एवम् शिक्षिका प्रशिक्षण शिविर
दिनांक 18 जून से 28 जून, 2015

स्थान : एस.एम.आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग वैस्ट, दिल्ली

उद्घाटन : वृहस्पतिवार 18 जून, 2015 सायं 5 बजे

समापन : रविवार 28 जून, 2015 प्रातः 10 से 1 बजे

निवेदनः सभी आर्य जनों से निवेदन है कि इस राष्ट्रीय शिविर में सैकड़ों कन्याएं भाग लेंगी, अतः अपनी श्रद्धा एवं सामर्थ्य अनुसार नकद राशि, आटा, दाल, चावल, देसी घी, मसाले आदि देकर पुण्य का लाभ उठाएं।

इस शिविर में योग्य प्रशिक्षिकाओं के निर्देशन में प्रशिक्षण दिया जाएगा।

प्रशिक्षकः **श्रीमती अभिलाषा, श्री सचिन**

इस शिविर को दो भागों में विभाजित किया जाएगा। (1) शिक्षिका प्रशिक्षण शिविर (2) सामान्य शिक्षण शिविर। जिन वीरांगनाओं ने चार शिविर किये हैं व उनकी आयु 15 वर्ष से अधिक है उन्हें पूर्ण शिक्षिका का प्रशिक्षण दिया जाएगा, ताकि वे भविष्य में शिक्षिकाओं की पूर्ति कर सकें।

प्रत्येक राज्य के प्रतिनिधियों से विशेष निवेदन है कि वह अपने-अपने राज्यों से कन्याएं भेज कर प्रशिक्षण प्राप्त करायें ताकि वह भविष्य में अपने स्थानों पर वीरांगना दल की शाखायें लगाने व शिविर लगाने में समक्ष हो सकें।

-: संयोजक :-

साध्वी डॉ.उत्तमायति	मृदुला चौहान	आरती खुराना	विमला मल्लिक
प्रधान संचालिका	संचालिका	सचिव	कोषाध्यक्ष

सम्पर्क करें:- मो. 08750482498 (दिल्ली), 09672286863 (अजमेर)

ऋषि દયાનન્દના મિશનના પ્રચાર-પ્રસાર માટે ટંકારાસમાચારના વધુમાં વધુ ગ્રાહક નોંધવીને સહયોગ આપો

ટંકારાસમાચાર આર્યજગતનું એક માત્ર બહુભાષીય માસિક પત્ર છે જેમાં વિદ્વતાસભર લેખો પ્રકાશિત થાય છે.

વાર્ષિક લવાજમ છે માત્ર એકસો રૂપિયા અને આજીવન માત્ર પાંચસો રૂપિયા

સમ્પર્ક કરોઃ શ્રી મહર્ષિ દયાનન્દ સરસ્વતી સ્મારક ટ્રસ્ટ દ્વારાઃ આર્યસમાજ અનારકલી, મન્દિર માર્ગ નવી દિલ્હી ૧૧૦૦૦૧

प्रकृति का अमृत

❒ ओम् जी दुआ

डाक्टर एन वीगमोर के अनुसार गेहूँ के पौधों के रस में 70 प्रतिशत तरल क्लोरोफिल, पौटाशियम, कैराटीन, प्रोटीन, 90 से ज्यादा खनिज लौहतत्त्व, कैल्सियम, एनजाइम, अमीनोएसिड तथा बहुत से विटामिन ए. बी.सी. इत्यादि मौजूद हैं। इस रस में पाए जाने वाले विटामिन B17 (Laetrile) को सभी आरोग्य शास्त्री कैंसर को नष्ट करने वाली एक मात्र औषधि मानते हैं। केवल एक मास तक गेहूँ के पौधों के रस का प्रयोग करने से यह शरीर में नई स्फूर्ति, उमंग प्रदान करना शुरु कर देता है। 4-6 माह तक इस रस का सेवन करने से शरीर में सारी बीमारियाँ घास के तिनके के भाँति बह जाती है। आपके शरीर में नई उमंग उद्वेलित हो उठेगी। आँखों में तेज जगमगा उठेगा, गालों पर नई कलियाँ खिल उठेंगी और रोम-रोम से यौवन प्रस्फुटित हो उठेगा।

गेहूँ के पौधों के रस में हीमोग्लोबीन बढ़ाने की मात्रा पाई जाती है। जो कि थेल्सेमिया रोग के लिए रामबाण साबित हुई है। हमारे दिमाग में ौमंज ळतें के लिए कई प्रकार के सवाल आते हैं जैसे कि Wheat grass juice क्या है? Wheat Grass Juice के क्या फायदे हैं? गेहूँ के पुष्ट दानों को बिना किसी रासायनिक खाद के शुद्ध मिट्टी में एक निश्चित तापमान में 7-8 इंच तक उगाया जाता है। गेहूं के नन्हें-नन्हें पौधों का रस पीने से शरीर में शक्ति बढ़ती है। यह रस उन अवाञ्छित पदार्थो को दूर करता है, जो आपके खून, उत्तकों, अंगो में जमा हो जाते हैं। गेहूं के पौधों का रस पर्यावरण से उपजे विष को अप्रभावी बना देता है, जिससे की हमारा शरीर अपना सन्तुलन फिर से पा सकता है और अपनी पूर्ण कार्यक्षमता से काम कर सकता हैं। इस रस के सेवन से इन्सान का मन शान्त रहता है और वह एकाग्र मन से हर प्रकार के कार्य को पूर्ण रूप से अंजाम देता है।

Wheat Grass Juice को दिन में कितनी बार पीना चाहिए?- आप अपने शरीर के अनुरूप जितना चाहें पी सकते हैं। रोगी व्यक्ति को 70/75 ग्राम के पौधों से शुरु करके बाद में इसकी मात्रा बढ़ा देनी चाहिए। रोगी व्यक्ति इस रस का सेवन जितनी अधिक मात्रा में करेगा वह उतनी जल्दी ही स्वस्थ होगा।

Wheat Grass Juice में ऐसा क्या है, जो यह शरीर को निरोगी करता है?- Wheat grass juice में 70 प्रतिशत क्लोरोफिल पाया जाता है, जो कि खून में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाता है, जिससे कि सारी बीमारियाँ पानी में बाढ़ की तरह बह जाती हैं तथा धीरे-धीरे शरीर के रोग अपने आप खत्म हो जाते हैं। Wheat grass juice में वो सब जरूरी विटामिन, मिनरल और प्रोटीन मौजूद हैं जो हमारे शरीर को चाहिए। गेहूं के पौधों का रस हमें इन सभी तत्त्वों को उसी मात्रा में प्रदान करता है, जो प्रकृति ने प्रदान की है। यानि की प्राकृतिक रूप से।

क्या Wheat Grass Juice को गर्भवती महिलाएं भी पी सकती हैं?- गर्भवती महिलाओं के लिए भी यह फायदेमन्द है। यह एक प्रकार का पूर्ण आहार है, जो हर एक शरीर की जरूरत होता है। गर्भवती महिलाएं गर्भावस्था में अगर इन गेहूं के पौधों का रस पीती हैं तो उनके गर्भस्थ शिशु को पूर्ण आहार मिलेगा, जिससे माँ एवं बच्चा दोनों स्वस्थ रहेंगे। जन्मजात बच्चे को भी गेहूं के पौधे की 2-4 बूंदे पिलाते रहने से वह सदैव स्वस्थ रहेगा। यह जूस महिलाओं के मासिक चक्र को भी नियमित रखता है। इस रस का प्रतिदिन सेवन करने से महिलाओं को मासिक चक्र में होने वाले दर्द से छुटकारा मिलता है तथा मासिक चक्र समय पर आना शुरु हो जाता है।

क्या Wheat Grass juice में कुछ मिलाकर भी पी सकते हैं तथा इसका स्वाद कैसा है?- Wheat Grass juice का स्वाद बिल्कुल प्राकृतिक मीठा है। इस रस में नमक, नींबू, मिर्च, मसाला कुछ भी मिला दिया जाए तो इस रस का असर खत्म हो जाता है। Wheat Grass juice अपने आप में सर्वश्रेष्ठ है। आप किसी घातक बीमारी के इलाज के लिए पी रहें तो Wheat Grass juice आपके शरीर के लिए सर्वोत्तम है।

क्या सभी प्रकार की घास मनुष्य के शरीर के लिए फायदेमन्द है? - सामान्य तौर पर सभी प्रकार की घास फायदेमन्द होती है परन्तु गेहूँ की घास मनुष्य के शरीर के लिए सर्वश्रेष्ठ है। क्योंकि मिट्टी में पाए जाने वाले 102 खनिज को यह पौधा सोंख लेता है, जो कि शरीर में रोगों से लड़ने की शक्ति प्रदान करता है। उदाहरण के तौर पर अगर कोई कुत्ता बीमार हो तो वह घास खाकर थोड़ी देर बाद उल्टी कर देता है। उल्टी में उसके शरीर के सारे जैवतत्त्व (गन्दगी) बाहर आ जातें है और गंदगी बाहर निकल जाने के बाद कुत्ता फिर स्वस्थ हो जाता है। इसी तरह जब बीमार व्यक्ति इसे पीता है तो पीने के बाद वह स्वस्थ महसूस करता है।

Wheat Grass juice पीने के अलावा इसके और क्या फायदे हैं?- Wheat Grass juice को आप कटने या छिलने पर Antiseptic की तरह लगा सकते हैं। थोड़ा सा गूदा लीजिए जो जूस निकालने के बाद बचता है उसे थोड़े Wheat Grass में भिगोइए जहां कटा है उसके ऊपर रखकर पट्टी बाँध दीजिए। इसे आप Eye Wash यानि आँखों की धुलाई के लिए भी प्रयोग में ला सकते हैं। गेहूँ के पौधों के रस को आखों में डालने से आंखों की रोशनी बढ़ती है। सिर पर लगाने से सिर की Dandruff से मुक्ति मिल सकती है। सूँघने से बन्द नाक खुल जाती है। माऊथ वास की तरह से भी Wheat Grass Juice का इस्तेमाल कर सकते हैं और रूई से कानों के भीतर लगाकर कान का मैल भी साफ कर सकते हैं। टी. वी. या कम्प्यूटर के पास रखी गई एक Wheat Grass से भरी ट्रे उनसे निकली तरंगो को नाकाम कर देती है।

Wheat Grass Juice हमारे लाल खून की कोशिकाओं को बढ़ाता है। ब्लड प्रेशर (उच्च रक्तचाप) सामान्य करता है। खून साफ करता है। अंगों व पाचन तन्त्र से कचरा दूर करता है। पाचन क्रिया तेज करता है। थायराइड ग्लैंड को उत्तेजित करता है, जिससे मोटापा ठीक होता है। इससे खून में जो अधिक क्षारीयता होती है, वह कम हो जाती है। कई अंदरूनी दर्द ठीक हो जाते हैं। अल्सर डायरिया और कई पाचनसम्बन्धी बीमारियाँ ठीक हो जाती हैं। Wheat Grass Juice में जो Enzyme और Amino Acid पाए जाते हैं, वे हमें कैंसर जैसी बीमारियों से बचाते हैं। ये हमारी कोशिकाओं को मजबूत करता है। Liver में जमे हुए विष को साफ करता है, वातावरण से हमारे अन्दर आए रसायनों को निष्प्रभावी बनाता है। Wheat Grass Juice Tumors (ट्यूमर्स) से लड़ता है।

Wheat Grass हमारे पेट के अन्दर जमा कचरा साफ करता है। अगर त्वचा पर कहीं खुजली हो रही है तो Wheat Grass Juice त्वचा पर उस जगह लगाने से खुजली उसी समय ठीक हो जाती है। धूप में झूलसी त्वचा को भी Wheat Grass Juice शान्त करता है। ौमंज ळतें कटने से, जलने से, कीड़े-मकोड़े के काटने से घाव होने पर, सूजन होने पर,

स्वास्थ्य दर्पण

स्वास्थ्य दर्पण

ट्यूमर व अल्सर सबको ठीक करता है। साँस ताजा व मोहक रखने के लिए इससे कुल्ला कीजिए। मसूड़े भी इससे ठीक हो जाते हैं। दाँतों की परेशानी भी Wheat Grass Juice से ठीक होती है। ये खून साफ करके कोशिकाओं को बूढ़ा होने से रोकता है और आपके बुढ़ापे को विलम्बित करता है। लटकती ढीली त्वचा में फिर से कसाव आता है। इसका Juice लगातार लेते रहने से Heart Attack होने का खतरा टाला जा सकता है।

Wheat Grass Juice शरीर में Detergent का काम करता है और इसे क्मवकतंदज के काम में भी प्रयोग किया जा सकता है। 5 मिनट तक Wheat Grass मुँह में रखने से दाँत के दर्द से आराम मिलता है। Wheat Grass चबाने या उसका गुदा (Juice में डूबा हुआ) मसूड़ों पर मलने से पायरिया (मसूड़ों का सड़ना व खून आना) ठीक हो जाता है। बाल सफेद नहीं होते। शरीर सुस्ती, फुर्ती व ताकत आ जाती है। पाचन क्रिया ठीक हो जाती है। खून का विकार ठीक करने में Wheat Grass Juice सर्वोत्तम है। Enzyme में भरपूर होता है, इसलिए त्वचा साफ रखता है और त्वचा के द्वारा ही Wheat Grass Juice के पोषक तत्व सोखे जा सकते हैं। यह आँतों की सफाई के लिए श्रेष्ठ है, हृदय को क्रियाशील रखती है। Wheat Grass Juice दुबारा कोशिकाएं बनाता है। Toxin (जैवतत्व, विष) को निष्प्रभावी करता है। प्रदूषित गैसों के फेफड़ों के अन्दर जाने से हुई बीमारियाँ व फेफड़ों के घाव ठीक करता है। (High Blood Pressure) को सामान्य करता है। शरीर से भारी धातुओं को निकालने में मदद करता है।

क्या Wheat Grass Juice को हर उम्र के व्यक्ति पी सकते हैं? बच्चे, जवान, वृद्ध एवं स्त्रियाँ सभी Wheat Grass Juice पी सकते हैं। ऐसा नहीं है कि सिर्फ बीमारी व्यक्ति ही इसको पी सकता है। बीमारी व्यक्ति के इस रस को पी लेने से स्वस्थ हो जाता है तो एक स्वस्थ व्यक्ति यदि इस रस का सेवन प्रतिदिन करे तो उसे कभी रोग नहीं होगा। Wheat Grass Juice पीने से शरीर में रोगों से लड़ने की शक्ति बढ़ती है।

Wheat Grass Juice के बारे में हम और जानकारी कैसे प्राप्त कर सकते हैं?- गेहूँ के पौधों का विवरण समय-समय पर अखबारों में छपता रहता है। Wheat Grass के बारे में पंजाब केसरी, हिन्दुस्तान, टाइम्स आदि कई अखबारों में छापा जा चुका है पुस्तक-कादम्बिनी, दिसम्बर अंक 2003 की पृष्ठ संख्या-107 पर इनका लेख-डॉ अरूण ने भी किया है। गेहूँ के पौधों का रोग-नाशक ईश्वर के द्वारा प्रदत्त अपूर्व गुणवत्ता का विवरण गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित पुस्तक-कल्याण, आरोग्य अंक की पृष्ठ संख्या-385 पर दिया गया है। पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिसीन एण्ड रिसर्च (पी.जी.आई.एम.आर.) चण्डीगढ़ के डाक्टरों का दावा है कि गेहूँ के पौधे शरीर की सभी बीमारियों के लिए श्रेष्ठ हैं तथा वहां के ऑनकोलाजी विभाग के प्रमुख डॉ. आर. के मारवा ने अपने एक्प्रीमेन्ट से यह साबित कर दिया है कि Wheat Grass Juice के बारे में, National Geographics Channel व Discovery Channel जानकारी देते रहते हैं।

Wheat Grass Juice कैसे बनाया जाता है?- 50 ग्राम गेहूँ के पौधों की जड़े काटकर फेंक दें और पौधों को छोटा-छोटा काट लें। शुद्ध पानी से धोकर मिक्सी में डाल दें। 100 ग्राम पानी डालकर केवल 2-3 बार घुमाएँ। अब इसे छानकर ताजा ही खाली पेट ग्रहण करें। इस रस को कृपया गटा-गट न पिएँ अपितु चुस्की ले-लेकर धीरे-धीरे पीएं।

नोट-यदि सेवन के उपरान्त आपको उल्टी या उबकाई आए या पेट भारी महसूस हो, सिरदर्द हो, दस्त लग जाए या अन्य कोई परेशानी हो तो घबरायें नहीं। यह आपके अशुद्धियों को बाहर निकालने के मार्ग प्रशस्त होने का लक्षण है। गेहूँ के पौधों को 2 या 4 दिन सँभालकर फ्रीज में रखा जा सकता है परन्तु इस रस का सेवन तुरन्त ही करना चाहिए वरना इस रस के पौष्टिक तत्त्व खत्म हो जाते हैं। डॉ. एन.बीगमोर के अनुसार यदि गेहूं के पौधों के रस को सुरक्षित रखने का कोई उपाय होता तो दुनियाँ में किसी दूसरी दबा की आवश्यकता नहीं होती। इस रस में नमक, नीबू, काली मिर्च एवं चीनी न डालें। स्वाद के लिए चाहें तो थोड़ा शुद्ध शहद मिला सकते हैं। या फिर मिक्सी में पीसते वक्त इसमें दो तुलसी के पत्त या 1 इंच अदरक का टुकड़ा डाल सकते हैं। यह सब डालने से Wheat Grass के गुण बढ़ जाते हैं।

सारांश यह है कि मासूम से दीखने वाले गेहूँ के पौधों का रस अर्थात् Wheat Grass Juice अर्थात् Green Blool में ऐसे अभूतपूर्व गुण विद्यमान हैं, जो सूखे पेड़ को भी हरा-भरा कर सकते हैं।

(सम्पादकः इसका सेवन करने से पूर्व अपने निकट आयुर्वेदाचार्य से सम्पर्क अवश्य कर लेवे।) - साभारः डी.ए.वी. आर्युवेदा

आवश्यकता है

टंकारा में श्री महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय को गुरुकुल परम्परा में निष्ठावान अध्यापकों की आवश्यकता है:-

- कक्षा 6 से 10 तक सामान्य अंग्रेजी के साथ भूगोल, इतिहास आदि पढ़ाने में सक्षम हो।
- कक्षा 6 से 10 तक विज्ञान तथा गणित आदि पढ़ाने में सक्षम हो।
- गुरुकुल झज्जर के पाठ्यक्रमानुसार शास्त्री तथा उत्तर मध्यमा की कक्षाओं में संस्कृत व्याकरण, साहित्य, दर्शन तथा ऋषि दयानन्द जी के ग्रन्थ पढ़ाने में सक्षम हो।
- गुरुकुल के अन्य कार्यो को करने में रूचि रखता हो।

वेतनमानः योग्यतानुसार दिया जायेगा। आवास तथा भोजनादि की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से होगी। आवेदक अपना बायोडेटा पासपोर्ट साईज की फोटो के साथ आवेदन भेज सकते है।

आचार्य रामदेव शास्त्री- श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

डाक- टंकारा, जिला-मोरबी (गुजरात) पिन-363650,

मोबाइल-0991321448, E-mail:tankaratrust@gmail.com

STEPS TOWARDS INNER PEACE

FOUR PURIFICATIONS

Bodily Temple: Are you free all bad habits? In your diet do you stress the vital foods-the fruits, vegetables, nuts and whole grains? Do you get to bed early and get enough hours of sleep? Do you get plenty of fresh air and sun-shine and exercise and contact with nature? If you can answer all of the above questions in the affirmative you have gone a long way toward purification of the bodily temple.

Purification of the Thoughts: It is not enough to do right things and say right things, you must also think right things. Positive thoughts can be a powerful infulence for good. Negative thoughts can make you physically ill. Be sure there is no unpeaceful situation between yourself and any other human being, for only when you have ceased to harbour unkind thoughts can you attain inner harmony.

Purification of the Desires: Since you are here to get yourself into harmony with the laws governing human conduct and with your part in the scheme of things, your desires should be focused in this direction.

Purification of the Motives: Obviously your motive should never be greed of self-seeking or the wish for self-glorification, but your should not even have the selfish motives of attaining inner peace for yourself. To be of service to your fellow human beings must be your motive before your life can come into harmony.

FOUR RELINQUISHMENTS

Self-Will: You have or it is as though you have two selves-the lower self which customarily governs you selfishly, and the higher self which stands ready to use you gloriously. You must subordinate the lower self by fefraining from doing the not-good things you are motivated toward- not suppressing them- so that the higher self can take over in your life.

Feeling of Separateness: All of us, all over the world, are cells the body of humanity. You are not separate from your fellow human beings and cannot find harmony while you feel separate and work for yourself alone. You can only find harmony when you realize the oneness of all work for the good of all.

Attachment: only when you have relinquished all attachment can you be really free. Material things are there for use, and anything you cannot relinquish when it has outlived its usefulness possessess you. You can only live in harmony with your fellow human beings if you have no feeling that you possess them and therefore no tendency to try to run their lives.

Negative Feelings: Work on relinquishing negative feelings. If you live the present moment, which is really the only moment you have to live-you will be less apt. to worry. If you realize that those who do mean things are psychlogically ill, your feelings of anger will turn into feelings of pity. If your recongnize that all your inner hurts are cause by your own wrong actions or your own wrong re-actions you will stop hurting yourself.

दान देने का मैथ्स और केमेस्ट्री

जॉन–रॉकफेलर अमेरिका के बहुत बड़े उद्योगपति और दानवीर थे। उन्होंने कहा था–''मैंने इतना पैसा इसलिए कमाया, क्योंकि मुझमें लोगों की मदद करने का जज्बा था। मैंने लोगों को दिया इसलिए मुझे मिला। यदि मैं सही तरह से पैसा दान करना बंद कर दूँ तो ईश्वर मुझसे पैसा वापस ले लेंगे।''

अर्थशास्त्री जॉन सी. ब्रुक्स ने जब 1905 में दिया रॉकफेलर का कथन पढ़ा तो उन्हें अजीब लगा कि पैसा बांटकर, कोई कैसे पैसा कमा सकता है? यह तो कोई इकोनॉमिक्स नहीं हुआ। उन्होंने सोचा कि यदि इकोनॉमिक्स की कक्षा में कोई छात्र उनसे पूछे कि मैं धनी होना चाहता हूँ तो क्या उसे मैं यह कहूँ कि अपना पैसा बांट दो धनी हो जाओगे? यह तो कोई बात नहीं हुई। उन्होंने रॉकफेलर को गलत साबित करने की ठान ली। तभी हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने अमेरिका के 41 समुदाय के 30 हजार लोगों के सेवाभाव व दान देने की प्रवृत्ति का अध्ययन करने की घोषणा की। ब्रुक्स बेचैनी से शोध के आंकड़ो का इंतजार करने लगे। आंकड़े आने पर वे महीनों कम्प्यूटर पर काम करते रहे तो नतीजा यही आया कि वे लोग धनी होते नजर आए, जिनमें देने की प्रवृत्ति थी। इतना ही नहीं उन्हें एक विरोधाभासी तथ्य भी नजर आया कि दो समान परिवार थे जिनके एक धर्म, एक नस्ल, परिवार में बच्चों की संख्या समान, समान आय, शहर एक, शिक्षा का स्तर समान यानी सबकुछ एक जैसा सिवाय इस बात के कि एक परिवार चैरिटी में दूसरे परिवार की तुलना में 100 डॉलर ज्यादा देता था और यह परिवार औसतन 375 डॉलर ज्यादा कमाता था। वे तो चकरा गए। उन्होंने नया डेटा कलेक्ट किया, नया सॉफ्टवेयर लाए पर, नतीजा वही। उन्होंने इसे प्रकाशित नहीं कराया। फिर उन्होंने 50 साल में अमेरिका में चैरिटी में आए बदलाव और आमदनी का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि 1954 और 2004 के बीच अमेरिकियों की खरीद क्षमता में 150 फीसदी वृद्धि हुई तो दान देने की क्षमता 190 फीसदी बढ़ी। यानी जितना पैसा आया, लोग उतने उदार होते गए। उन्होंने पाया कि यदि अमेरिकी दान की रकम को 1 फीसदी बढ़ाते हैं तो बाजार में 1 अरब डॉलर आते हैं, जिनसे नए 39 अरब डॉलर पैदा होते हैं। दान देना व्यक्तिगत निवेश ही नहीं यह महान् देशभक्ति का काम है। दान के पैसे से नौकरियां पैदा होती हैं, आर्थिक वृद्धि होती है, अवसर पैदा होते हैं और टैक्स से होने वाली आय बढ़ती है। अमेरिकी लोग फ्रांसिसियों की तुलना में साढ़े तीन गुना, जर्मनों से 7 गुना और इटली के लोगों की तुलना में 14 गुना ज्यादा दान देते हैं। भ्रम में पड़े ब्रुक्स अपने मनोवैज्ञानिक सहयोगी के पास गए। उन्होंने कहा–''हम यह बात बरसों से जानते हैं। तुम अर्थशास्त्री सिर्फ पैसा देखते हो। पैसा जो खुशी लाता है, हम उसे देखते हैं। खुश व्यक्ति ज्यादा उत्पादक होता है। ज्यादा काम करता है।'' चैरिटी से खुशी और खुशी से सफलता।

मार्निया रॉबिन्सन की किताब 'क्यूपिड्स पॉइजन्ड एरो' के मुताबिक खुद की खुशी के लिए जब हम कुछ करते हैं तो डोपामाइन हार्मोन निकलता है। यह हार्मोन क्रैविंग यानी किसी चीज की तीव्र इच्छा तो पैदा करता जाता है, संतुष्टि नहीं देता। एक इच्छा पूरी हो तो यह दूसरी इच्छा पैदा करता है। इसका स्तर बहुत ज्यादा हो जाता है तो व्यक्ति डिप्रेशन में चला जाता है। डोपामाइन को संतुलित करने और प्रेम की भावना पैदा करने वाला हार्मोन है आक्सीटोसिन। यह तनाव दूर कर, रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत करता है, हमें दूसरों की परवाह करने वाला, निःस्वार्थी, दयालु और प्रेमपूर्ण बनाता है। बिना मांगे देने, आँखो में देखकर मुस्कराने, गौर से किसी की बात सुनने, माफ करने और अहसान जताने से यह हार्मोन पैदा होता है और इस हार्मोन से ये सकरात्मक प्रवृत्तियाँ पैदा होती हैं।

– सौजन्य इंटननेट

महात्मा हंसराज की 151वीं जयंती पर हुआ भव्य समारोह

डी.ए.वी. का हर शिक्षक हो धर्म शिक्षक- श्री पूनम सूरी

डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्वावधान में सोलन में आयोजित 'महात्मा हंसराज दिवस' के अवसर पर देश-भर से आए पांच हजार से अधिक आर्य नर-नारियों को सम्बोधित करते हुए डी.ए.वी. तथा प्रादेशिक सभा के प्रधान आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी ने महात्मा हंसराज के स्वप्नों को पूर्ण करने के लिए सत्य और धर्म की राह पर चलने का भावपूर्ण आह्वान किया। देश का नैतिक ताना-बाना छिन्न-भिन्न हो चुका है। प्रतिदिन बुरे-से-बुरा समाचार पढ़ने और देखने को मिलते हैं। दूरदर्शन पर 'क्राइम रिपोर्टर' है 'इविल रिपोर्टर' है, पर आर्य समाज नहीं। आज आवश्यकता है हम सब संगठित होकर ऋषि दयानन्द और महात्मा हंसराज के कार्यक्रम को फिर से उठायें। आइए, सब मिलकर संकल्प लें-हम आर्य बनेंगे, सत्य को धारण करेंगे, धर्म के मार्ग पर चलेंगे। ऐसा होने पर ही हम ओ३म् ध्वज को विश्व में फहरा सकेंगे, जिनसे आज सोलन नगर केसरी हो गया है।'

प्राचार्यों और शिक्षकों को महात्मा हंसराज के जीवन, उनके कार्यों और उद्देश्यों को धारण करने का आह्वान करते हुए प्रधान जी ने बताया कि इतिहास के प्रोफेसर होते हुए महात्मा हंसराज जी ने डी.ए.वी. कॉलेज के विद्यार्थियों को स्वयं धर्म-शिक्षा पढ़ाई। धर्म-शिक्षा को लेकर सामान्य लोगों में फैली भ्रान्ति का निवारण करते हुए श्री सूरी जी ने कहा-'धर्म-शिक्षा का अर्थ केवल वेदमन्त्रों का पाठ नहीं, धर्म तो वह है जिसने हमें धारण कर रखा है और वह धर्म है सत्य।' डी.ए.वी. का हर शिक्षक सत्य का राही हो, सत्य का आचरण करे और सत्य का प्रचार करे। इस रूप में डी.ए.वी. का हर शिक्षक धर्म-शिक्षक है। इससे पूर्व श्री सूरी जी ने स्वामी दयानन्द के अधूरे कार्यो के संकेत करते हुए महात्मा हंसराज के त्याग, समर्पण की सार्थकता को सिद्ध किया।

मान्य प्रधान जी के नेतृत्व में पिछले कुछ वर्षो से आरम्भ की गई परम्परा को निभाते हुए इस वर्ष महात्मा हंसराज दिवस पर शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियों और योगदान के लिए प्रो. (डॉ.) जसपाल सिंह संधू, सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा प्रो. (डॉ.) परमजीत सिंह जसवाल, उप-कुलपति, राजीव गांधी नेशनल लॉ यूनीवर्सिटी (पटियाला) को डी.ए.वी. के विशिष्ट सम्मान से अलंकृत किया गया।

इस अवसर पर आर्य संन्यासियों एवं आर्य विद्वानों में महात्मा चैतन्यमुनि (सुन्दर नगर, हिमाचल), आचार्या डॉ. अन्नपूर्णा (देहरादून, उत्तराखण्ड), साध्वी डॉ. उत्तमा उज्ज्वला यति (अजमेर, राजस्थान), स्वामी सर्वदानन्द (हरियाणा), माता सत्यप्रिया यति (सुन्दर नगर, हिमाचल), डॉ. प्रियंवदा वेदभारती (नजीबाबाद, उत्तर प्रदेश), पंडित रामस्वरूप (अजमेर-राजस्थान), प्रो. सुन्दरलाल कथूरिया (दिल्ली), डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार (कुरूक्षेत्र, हरियाणा) को वेद एवं आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के लिए सम्मानित किया गया।

प्रतिवर्ष की भाँति शैक्षिक गुणवत्ता तथा संस्थाओं के बहुमुखी विकास हेतु डॉ. बी.बी. शर्मा (डी.ए.वी. कॉलेज, जालन्धर) श्री एस. के. वर्मा (पी.जी.डी.ए.वी. सीनियर सैकेण्डरी पब्लिक स्कूल, वेस्ट पटेल नगर, दिल्ली), श्रीमती सतवंत कौर भुल्लर (आर.बी.डी.ए.वी. सीनियर सैकेण्डरी पब्लिक स्कूल, भटिण्डा), श्रीमती साधना बख्शी (डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, पुण्डरी, हरियाणा) को सम्मानित किया गया। आर्य समाज की विचारधारा के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय कार्य के लिए श्री सिकन्दर हयात खाँ (डी.ए.वी. सीनियर सैकेण्डरी पब्लिक स्कूल, धर्मशाला) को 'आर्य सेवक सम्मान' से सम्मानित किया गया। मान्य प्रधानजी ने घोषणा की कि आर्य समाज की गतिविधियों तथा इसके प्रचार-प्रसार में निश्चित मापदण्डों के आधार पर यह विशेष सम्मान प्रतिवर्ष एक प्राचार्य को दिया जाएगा।

प्रातः काल एक विशेष यज्ञ का अनुष्ठान किया गया जिसमें मुख्य यजमान मान्य श्री पूनम सूरी, श्रीमती मणि सूरी जी के साथ डी.ए.वी. के पदाधिकारी उपस्थित हुए। संन्यासीवृंद, आर्य विद्वानों ने यज्ञ में आहुतियाँ प्रदान की तथा मुख्य यजमान दम्पति को आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर डी.ए.वी. कॉलेज फॉर गर्ल्स, यमुना नगर की 400 छात्राओं द्वारा एक नृत्य नाटिका 'परम्परा यह त्याग की' की हृदयग्राही प्रस्तुति भी दी गई।

इंसान मकान बदलता है,
वस्त्र बदलता है, सम्बन्ध बदलता है,
फिर भी दुःखी रहता है क्योंकि,
वह अपना स्वभाव नहीं बदलता...!

टंकारा समाचार जून, 2015
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2015-16-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2015-16-17
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-06-2015
R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.05.2015

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली–5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय